SHREE SOMNATH

The Glorious Symbol of Bharatiya Unity



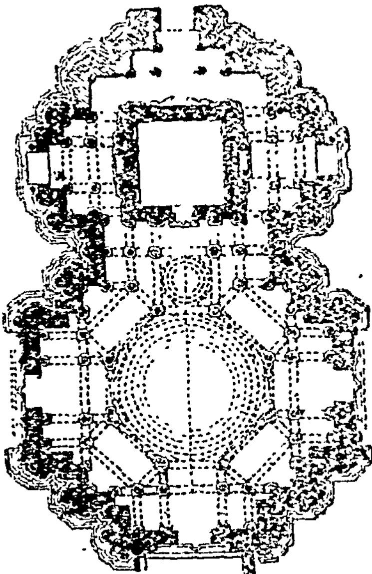
Ever since Ānarta was providentially directed to step over into, to colonize and to develop that vast stretch of land situated on the Western Sea which we now know as Saurāshtra, the Western sea-board of Saurāshtra has been a highly conjured place of great fascination for the pilgrims from over the main land beyond the Isthmus of Saurāshtra.

It was here, during that pre-historic period mystified deeper by the later myths woven by posterity, that Haryashva of Solar Line inherited the Kingdom of his father-in-Law Madhu of Lunar Line, at Giripur in Ānarta country whose one division was said to be Saurāshtra.

It was also here, in later times, that Lord Krishna the most illustrious scion of the Haryashva Dynasty (Harivansha) returned to his parental land and established a Yādava principality by founding Dwārkā on the margin of the Western Sea.

And it was even here, to put it in an historical way, that the mythical King Chandra, a distant fore-father of Shree Krishna propitiated God Shiva to countermand the curse of 'wasting disease' (*Kshaya-Roga*), and in resplendent commemoration of which event erected on the Western Sea a temple with adoring devotion and dedicated it to Lord Shiva as Shree Someshwara or Shree Somnāth.

Since that auspicious moment of Time, the Great Leveller, Somnāth has been in the fore-front of the twelve *Jyotir-Lingas* and has inspired so many of his devotees to 'Do and Die' for the Unity of Bhāratavarsha.



Ground Plan of Old Somnath

During the tumultuous times of the Muslim Rule Somnāth bore, for times over and over again, the brunt of their iconoclastic zeal and suffered heavily every time only to inspire and instil fresh urge and vigour to repel the invasions and to protect our Eternal Culture (*Sanātan Sanskriti*).

The tradition, as preserved in the Bhadrakāli Inscription of A. D. 1169 at Verāval, says that the Temple of Somnāth was first erected of gold by Chandra, of silver by Rāvana, of wood by Krishna, of big slabs of stone by Bhimdeva (1030 A.D.)

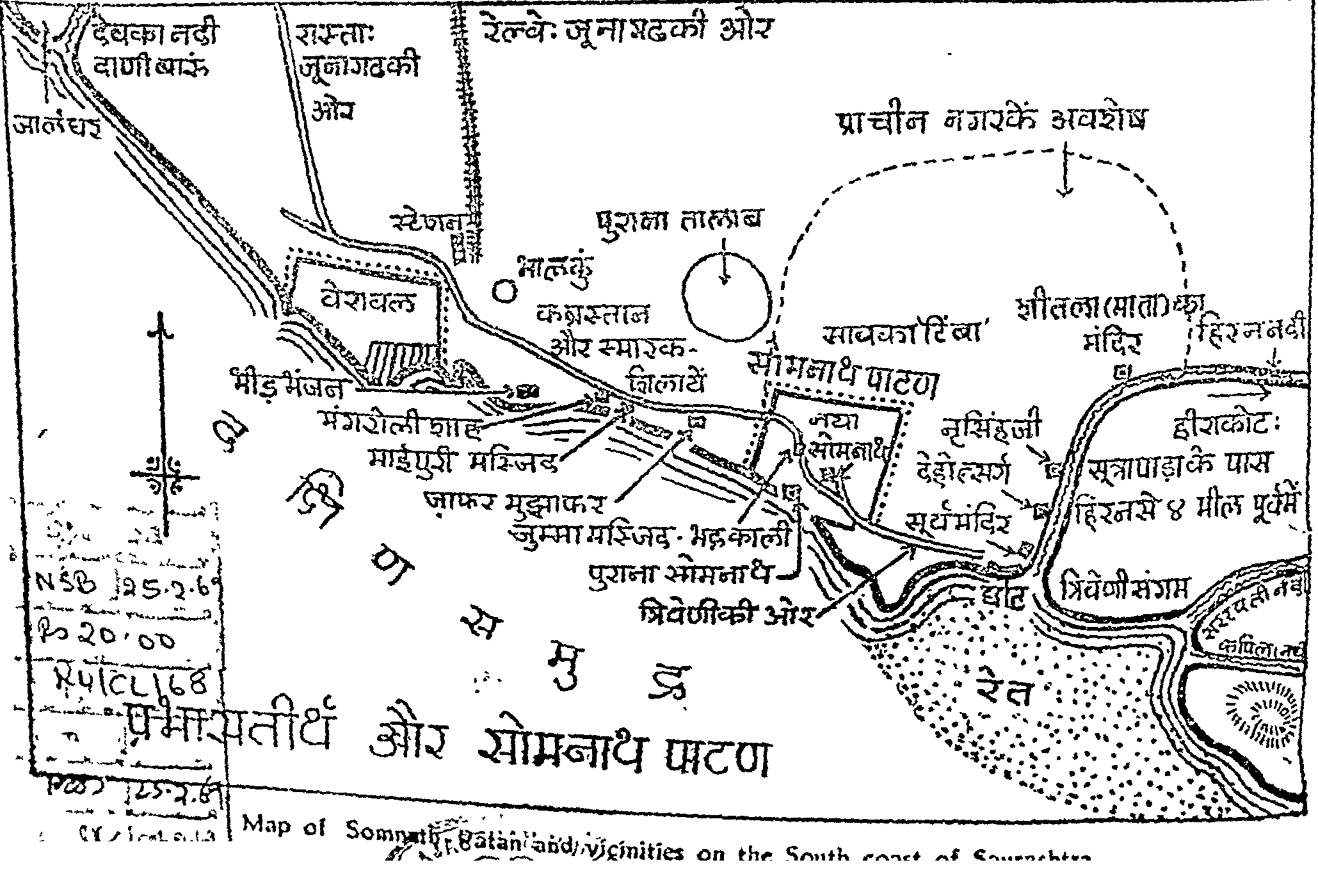
and of great beauty by Kumārpāl (1169 A.D.).

The structural and architectural history of the Somnāth Temple has revealed a continuity of about 2,000 years of its existence at the very spot where it is now once again rising on the Western Sea in the time-honoured ancient Prabhās-Kshetra so reverentially celebrated in our Paurānic scriptures.

The sculptures, the plans, the courtyard pavements, the four holes one above the other in the northern wall of the sanctum showing the four water-outlets of four different periods, and other excavated material go to show that the temple has occupied the self-same site at least from the beginning of our era—say for the last two milleniums.

This album shows in a very impressive manner with the help of the sculptures and other material, how the Spirit of Somnāth has been kept up alive by his torch-bearers, and how, after every attempt at destruction, Somnāth has risen up, rejuvanated with more power and added vigour from the fallen debris like that fabulous bird Phoenix of Greek mythology which rose up every time invigorated from its own ashes.

And indeed now at last Shree Somnāth has proved to be the glorious symbol of Bhāratiya solidarity, as we all see here at Prabhās Patan today, Friday the 5th of Vaishākha Bright Half of V. S. 2007, the 11th of May 1951 A.D., the memorable day of the Pratishthā of Shree Somnāth's Linga in His own world-famous Glorious House.



Map of Somnath Patan and vicinities on the South coast of Saurashtra

श्री सोमनाथ

भारतीय अैक्यका भव्य प्रतीक

जबसे आनर्तके भाग्यमें यह कहा गया कि वह सौराष्ट्रमें अपना पाँव रखे और अुसे अपना विस्तृत संस्थान बनाकर समृद्ध करे तबसे पश्चिमी समुद्र से सटा हुआ सौराष्ट्रका यह विशाल भूमिखण्ड समस्त भारतके यात्रियों के लिये अेक गौरवपूर्ण तीर्थधाम बना हुआ है.

प्राचीन समयमें अिस प्रागैतिहासिक स्थान सम्बन्धी कअी रहस्यपूर्ण कथाअें पिछली पीढ़ी द्वारा रची गयी हैं. इन कथाओंसे मालूम होता है कि आनर्त देशके गिरिपुर प्रदेशका राज्य सूर्यवंशी हर्यश्व राजाको अपने श्वसुर चंद्रवंशी मधुराजासे विरासतमें प्राप्त हुआ था. अिसी गिरिपुर प्रदेशका अेक भाग यह सौराष्ट्र माना जाता है.

आगे चलकर, अिसी स्थान पर हर्यश्व हरिवंशके विख्यात वंशज भगवान् श्री कृष्णने अपनी पैतृक भूमि पर आ कर पश्चिमी समुद्रके अंतिम छोर द्वारिका में यादवोंका राज्य स्थापित किया था.

अैतिहासिक दृष्टिसे देखने पर मालूम होता है कि भगवान श्री कृष्णके बहुत पहलेके पूर्वज पौराणिक राजा चंद्रने भगवान शिवको क्षयरोग-शापनिवारणार्थ प्रसन्न किया और अुसकी भव्य स्मृतिमें अिस पश्चिमी समुद्रके तट पर परम श्रद्धासे अेक मंदिर बनवाया, और अुसे भगवान श्री सोमेश्वर–सोमनाथ–को अर्पित किया.

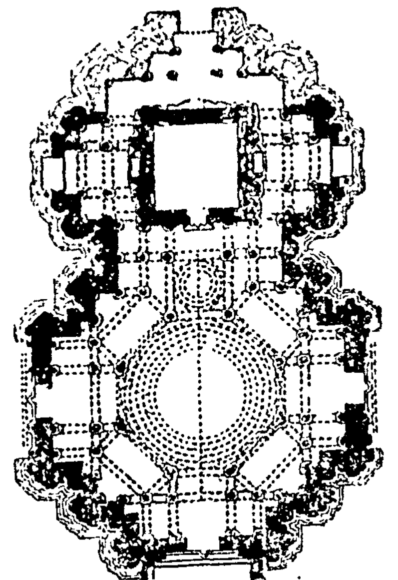
अुसी धन्य क्षणसे 'महाकाल सोमनाथ' द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें प्रधान बन कर यहाँ रह रहे हैं, और अपने अनेक भक्तोंको भारतवर्षकी अेकता के लिये 'करेंगे और मरेंगे'की प्रेरणा देते रहे हैं.

मुसलमानोंके तुफ़ानी अमलमें सोमनाथने बार-बार मूर्ति तोडनेवालोंके आक्रमण तथा नुकसान सहे हैं, और साथ ही साथ अैसे आक्रमणकारियोंका मुकाबला करनेके लिये तथा सनातन संस्कृतिकी रक्षाके लिये प्रजाको नया बल तथा आशाकी प्रेरणा दी है.

वेरावलके भद्रकालीके मंदिरमें सुरक्षित अी. स. ११६९के शिलालेखसे पता चलता है कि सोमनाथका मंदिर पहले चंद्रने सुवर्णका, रावणने चांदीका, कृष्णने लकड़ी का तथा अी. स. १०३०में भीमदेवने प्रस्तरखण्डोंसे निर्माण किया था। अिस मंदिरको अी. स. ११६९में कुमारपालने परम सुशोभित किया था.

मंदिरके स्थापत्यके अितिहाससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि पिछले दो हज़ार वर्षोंसे यह मंदिर अुसी स्थान पर स्थित है, जिस स्थान पर आज पुनः अुसका पुनरुद्धार हो रहा है. यह स्थान वही है कि जो पश्चिमी समुद्रके तट पर अनादि कालसे पवित्र प्रभासक्षेत्रके रूपमें माना जाता रहा है.

स्थापत्य, रचना तथा सभागृह की फ़र्श, अेवम् निजमंदिरकी अुत्तरी दीवारमें अेकदूसरेके अूपर आये हुअे भिन्न-भिन्न युगोंमें



पुराना सोमनाथ की तलका आलेखन

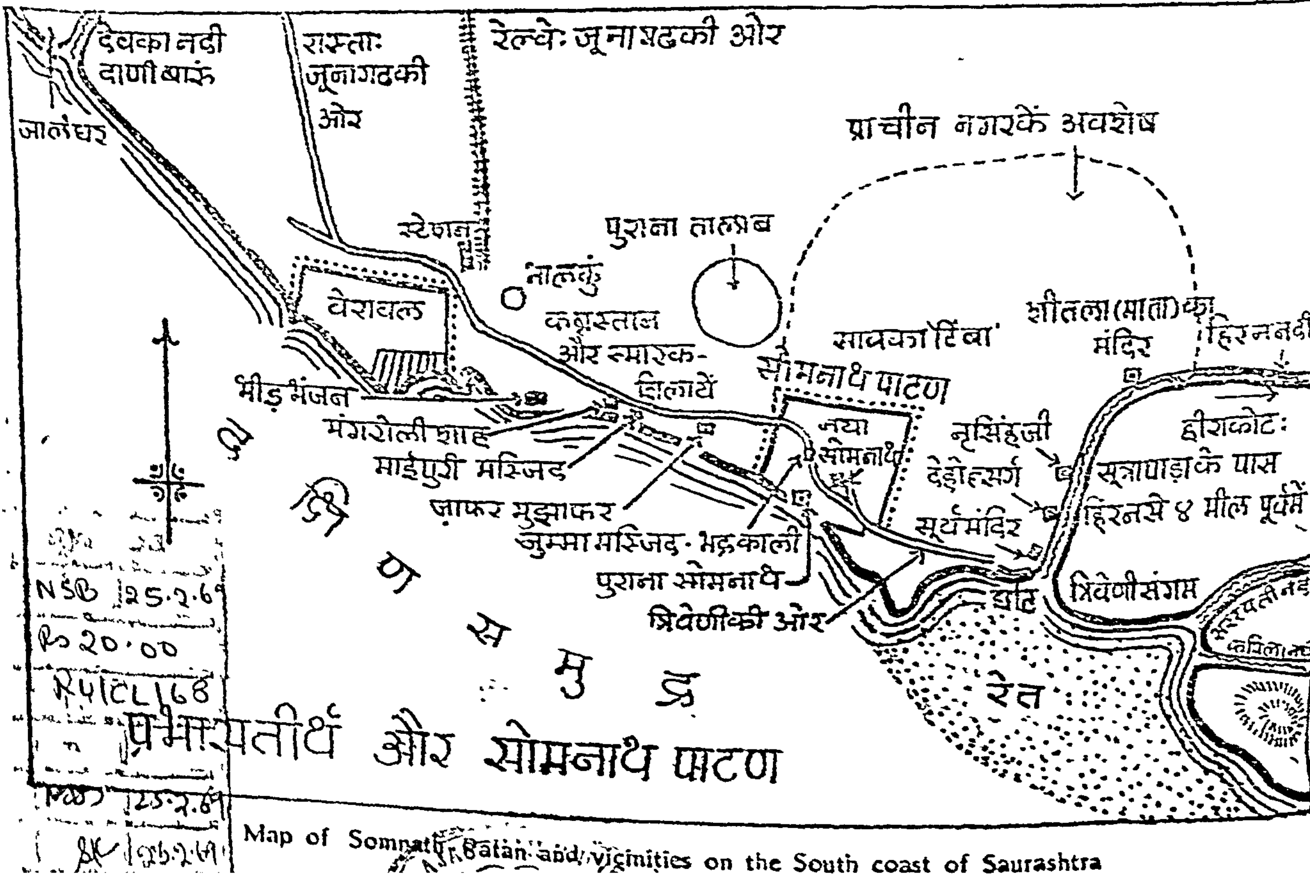
and of great beauty by Kumārpāl (1169 A.D.).

The structural and architectural history of the Somnāth Temple has revealed a continuity of about 2,000 years of its existence at the very spot where it is now once again rising on the Western Sea in the time-honoured ancient Prabhās-Kshetra so reverentially celebrated in our Paurānic scriptures.

The sculptures, the plans, the courtyard pavements, the four holes one above the other in the northern wall of the sanctum showing the four water-outlets of four different periods, and other excavated material go to show that the temple has occupied the self-same site at least from the beginning of our era—say for the last two milleniums.

This album shows in a very impressive manner with the help of the sculptures and other material, how the Spirit of Somnāth has been kept up alive by his torch-bearers, and how, after every attempt at destruction, Somnāth has risen up, rejuvanated with more power and added vigour from the fallen debris like that fabulous bird Phoenix of Greek mythology which rose up every time invigorated from its own ashes.

And indeed now at last Shree Somnāth has proved to be the glorious symbol of Bhāratiya solidarity, as we all see here at Prabhās Patan today, Friday the 5th of Vaishākha Bright Half of V. S. 2007, the 11th of May 1951 A.D., the memorable day of the Pratishthā of Shree Somnāth's Linga in His own world-famous Glorious House.



Map of Somnath Patan and vicinities on the South coast of Saurashtra

श्री सोमनाथ

भारतीय अैक्यका भव्य प्रतीक

जबसे आनर्तके भाग्यमें यह कहा गया कि वह सौराष्ट्रमें अपना पाँव रखे और अुसे अपना विस्तृत संस्थान बनाकर समृद्ध करे तबसे पश्चिमी समुद्र से सटा हुआ सौराष्ट्रका यह विशाल भूमिखण्ड समस्त भारतके यात्रियों के लिये अेक गौरवपूर्ण तीर्थधाम बना हुआ है.

प्राचीन समयमें अिस प्रागैतिहासिक स्थान सम्बन्धी कअी रहस्यपूर्ण कथाअें पिछली पीढ़ी द्वारा रची गयी हैं. इन कथाओंसे मालूम होता है कि आनर्त देशके गिरिपुर प्रदेशका राज्य सूर्यवंशी हर्यश्व राजाको अपने श्वसुर चंद्रवंशी मधुराजासे विरासतमें प्राप्त हुआ था. अिसी गिरिपुर प्रदेशका अेक भाग यह सौराष्ट्र माना जाता है.

आगे चलकर, अिसी स्थान पर हर्यश्व हरिवंशके विख्यात वंशज भगवान् श्री कृष्णने अपनी पैतृक भूमि पर आ कर पश्चिमी समुद्रके अंतिम छोर द्वारिका में यादवोंका राज्य स्थापित किया था.

अैतिहासिक दृष्टिसे देखने पर मालूम होता है कि भगवान श्री कृष्णके बहुत पहलेके पूर्वज पौराणिक राजा चंद्रने भगवान शिवको क्षयरोग-शापनिवारणार्थ प्रसन्न किया और अुसकी भव्य स्मृतिमें अिस पश्चिमी समुद्रके तट पर परम श्रद्धासे अेक मंदिर बनवाया, और अुसे भगवान श्री सोमेश्वर–सोमनाथ–को अर्पित किया.

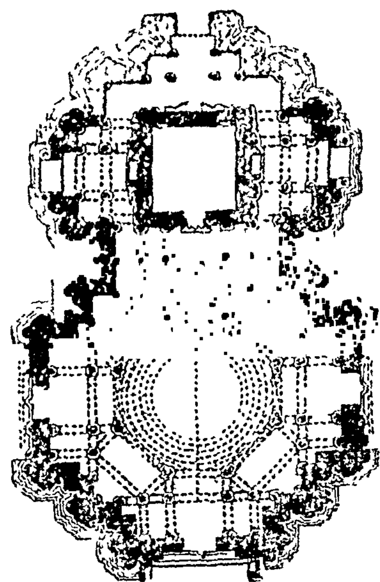
अुसी धन्य क्षणसे 'महाकाल सोमनाथ' द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें प्रधान बन कर यहाँ रह रहे हैं, और अपने अनेक भक्तोंको भारतवर्षकी अेकता के लिये 'करेंगे और मरेंगे'की प्रेरणा देते रहे हैं.

मुसलमानोंके तुफ़ानी अमलमें सोमनाथने बार-बार मूर्ति तोडनेवालोंके आक्रमण तथा नुकसान सहे हैं, और साथ ही साथ अैसे आक्रमणकारियोंका मुकाबला करनेके लिये तथा सनातन संस्कृतिकी रक्षाके लिये प्रजाको नया बल तथा आशाकी प्रेरणा दी है.

वेरावलके भद्रकालीके मंदिरमें सुरक्षित अी. स. ११६९के शिलालेखसे पता चलता है कि सोमनाथका मंदिर पहले चंद्रने सुवर्णका, रावणने चांदीका, कृष्णने लकड़ी का तथा अी. स. १०३०में भीमदेवने प्रस्तरखण्डोंसे निर्माण किया था। अिस मंदिरको अी. स. ११६९में कुमारपालने परम सुशोभित किया था.

मंदिरके स्थापत्यके अितिहाससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि पिछले दो हज़ार वर्षोंसे यह मंदिर अुसी स्थान पर स्थित है, जिस स्थान पर आज पुनः अुसका पुनरुद्धार हो रहा है. यह स्थान वही है कि जो पश्चिमी समुद्रके तट पर अनादि कालसे पवित्र प्रभासक्षेत्रके रूपमें माना जाता रहा है.

स्थापत्य, रचना तथा सभागृह की फ़र्श, अेवम् निजमंदिरकी अुत्तरी दीवारमें अेकदूसरेके अूपर आये हुअे भिन्न-भिन्न युगोंमें

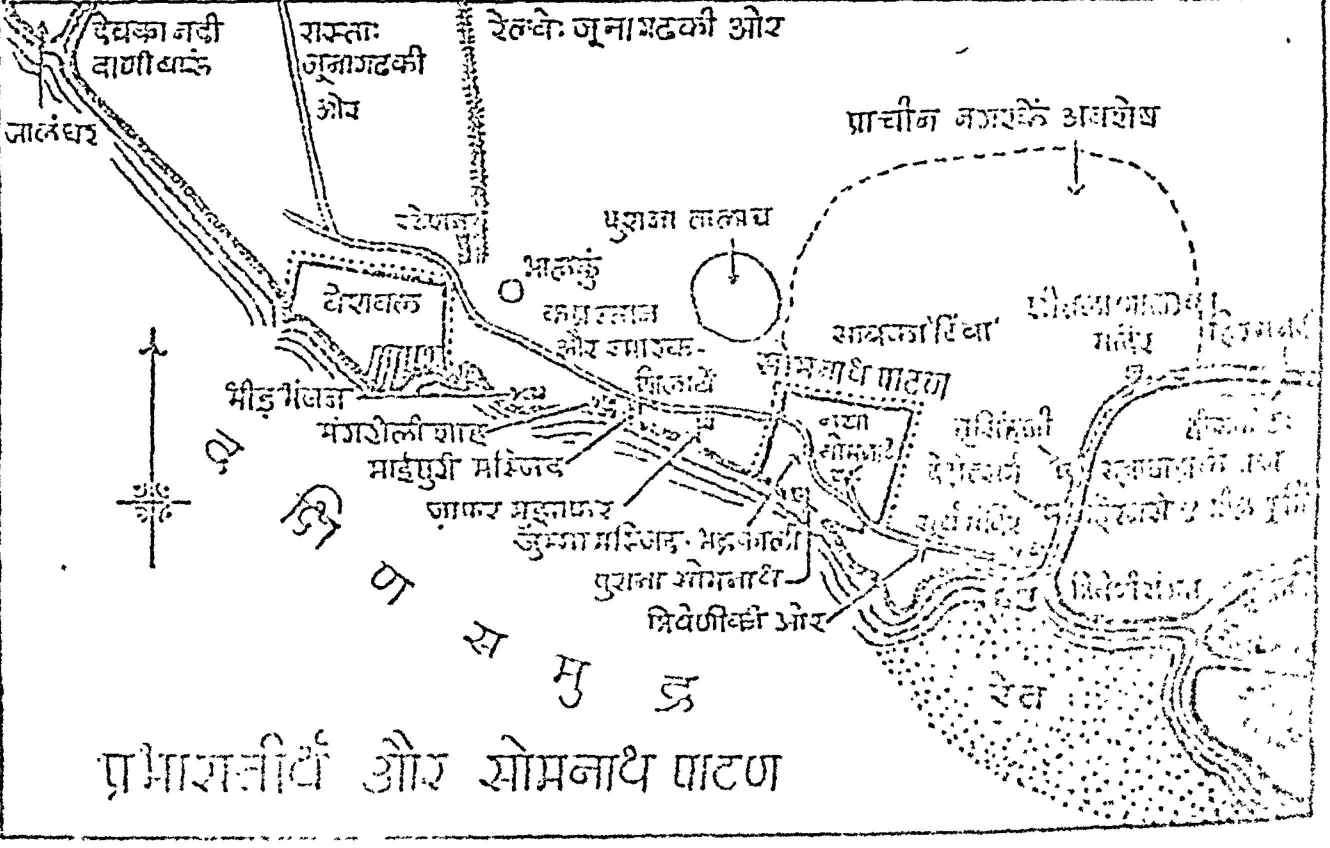


पुराना सोमनाथ की तलका आलेखन

जलधाराओंके लिये बनाये गये चार जलमार्गोंसे तथा अन्य पदार्थोंसे प्रतीत होता है कि यह मंदिर अिस युगके प्रारंभसे ही, अर्थात् दो हज़ार वर्षोंसे, अिसी स्थान पर स्थित है.

यह चित्रावली स्थापत्य तथा अन्य पदार्थोंकी सहायतासे प्रभावोत्पादक ढंगसे स्पष्ट बता रही है कि सोमनाथकी प्रेरणाशक्तिको अुसके ज्योतिर्धरोंने आज तक कैसे जीवित रखा और विनाशके हर प्रयत्नके बाद सोमनाथ कैसे अुठ खडे हुअे, तथा अीन जीर्ण खण्डोंसे, ग्रीक पौराणिक फीनिक्स पक्षीकी तरह, अपनी ही भस्मसे शक्तिको कैसे विशिष्ट रूपसे आगे बढ़ाया.

सचमुच श्री सोमनाथ भारतीय संगठन के अेक भव्य प्रतीकके रूप में सिद्ध हुअे हैं. हमारा सौभाग्य है कि हम वही पुराणप्रसिद्ध प्रभास-पाटण क्षेत्रमें आज, वैशाख शुक्ला ५मी, २००७ बि. शुक्रवार, ११ मअी १९५१ अी. के स्मरणीय दिवसको, श्री सोमनाथ लिंगकी प्रतिष्ठा अपने ही विश्वविख्यात घर–भारत–में देख रहे हैं.



सोमनाथ पाटण और अुसके पड़ोसमें सौराष्ट्रके दक्षिण किनारे पर आये हुअे स्थानोंका नकशा

CONTENTS
समावेश

卐

સોમનાથની



જ્યોતિર્લિંગ—સોમનાથ

આગીઠહિકા

राष्ट्रपति का संदेश

अवसर : सोमनाथ की यात्रा

स्थळ : सोमनाथ मंदिर

दिनांक २८–९–५९ (सोमवार)

महामहिम जामसाहेब, पू. पूजारियों, देवियों और सज्जनों !

प्राय: आठ वर्षो के बाद मुझे एक बार और सौभाग्य प्राप्त हुआ कि मैं यहाँ आकर दर्शन कर सका। यह स्थान अनंत काल से तीर्थस्थान रहा है, और बावजूद इसके कि इस पर समय समय पर विपत्तियाँ आती गई, यह हमेशे पुनर्जीवित होता रहा और अपने गौरव को आजतक हमेशे बनाये रहा। और यह लोगों के लिये बडा गौरव का विषय है कि स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई और महामहिम जामसाहेब के अध्यक्षता में इस स्थान का एक प्रकार से फिर से पुनर्जीवन किया गया है। मुझे यह आशा है कि यह कीर्ति उस तरह से अनंत काल तक चलती रहेगी जिस तरह से कि इस स्थान की कीर्ति और महत्ता आज तक वर्तमान रही है ! यहाँ आकर केवल एक ही साथ रहनी चाहिये और वह यह कि ईश्वर के पग में प्रेम हो और यहाँ से यह आशीष मिलें कि हम अपने जीवन को सफल बना सकें ! यही प्रार्थना है, यही वंदना है, और इन शब्दों के साथ मैं एक बार फिर नमस्कार करता हूँ।

સોમનાથની માર્ગદર્શિકા

પ્રકાશક :
શ્રી. પ્ર. હી. પ્રેમાણી
સોમનાથ ટ્રસ્ટ વતી
રાજમહેલ, જામનગર

કિંમત : ૭૫ નયે પૈસે



સોમનાથ …

જામનગર



મંદિરનો ઉદ્‌ગમ

यत्र गंगा च यमुना यत्र प्राची सरस्वती ।
यत्र सोमेश्वरो देवस्तत्र माममृतं कृतं कृधीन्द्रायेन्दो परिस्रव ॥

" જ્યાં ગંગા, યમુના અને પ્રાચી સરસ્વતી—એ નદીઓનો ત્રિવેણીસંગમ થાય છે અને જ્યાં સોમનાથ પ્રભુ વિરાજે છે ત્યાં મને અમૃતત્વ અર્પો. હે સોમ! ઈન્દ્રને માટે અમૃત વરસાવો."

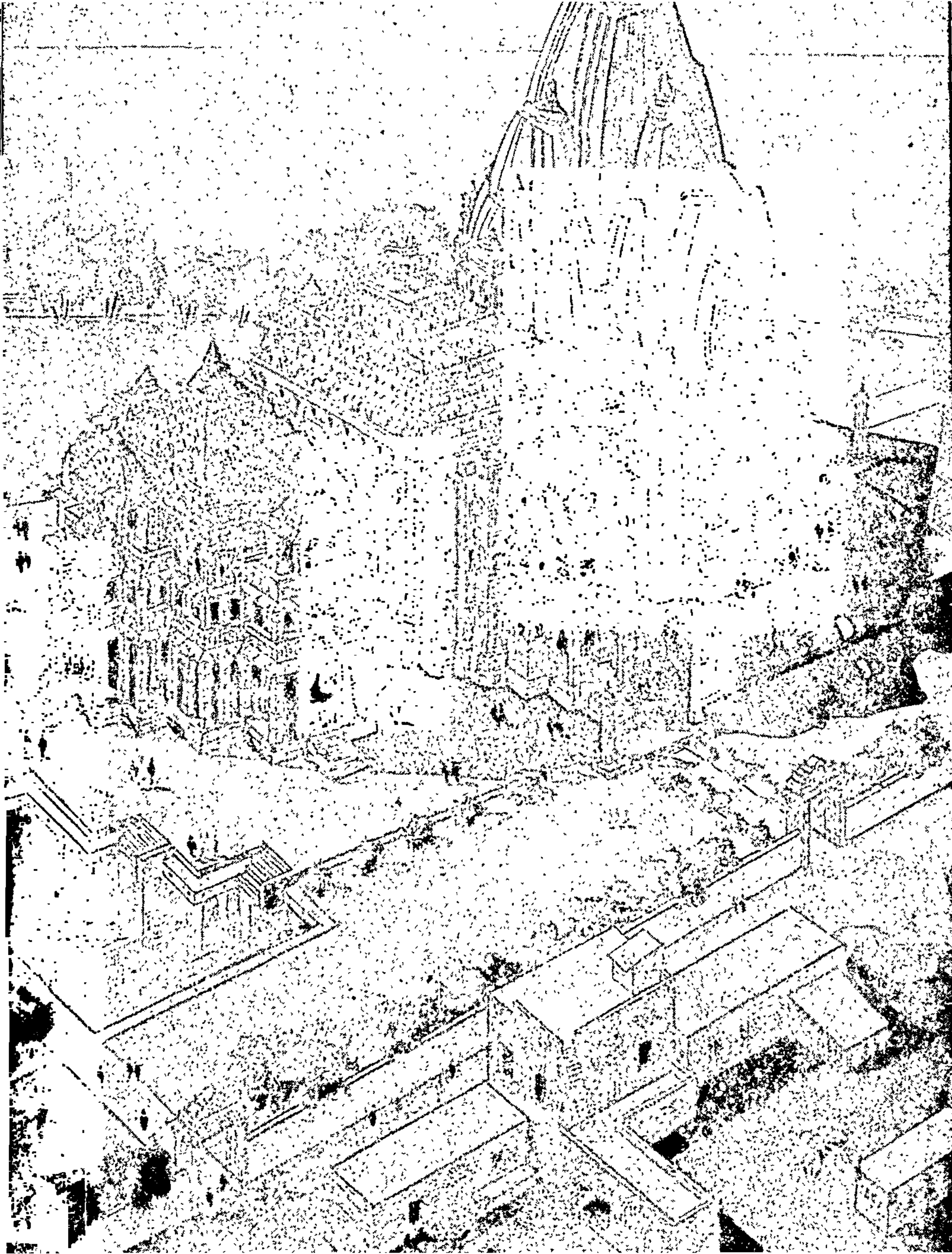
(ઋગ્વેદ, ખિલ)

સૌરાષ્ટ્રના દક્ષિણકાંઠે પ્રભાસપાટણમાં આવેલું સોમનાથ પ્રભુનું મંદિર અનુશ્રુતિ પ્રમાણે સૃષ્ટિની ઉત્પત્તિ જેટલું જ પુરાણું છે. ઉપર આપેલા ઋગ્વેદના અવતરણથી તદ્દન સ્પષ્ટ ખ્યાલ આવે છે કે વૈદિક સમયમાં આ પવિત્ર ધામ ઘણું જ જાણીતું હતું. મહાભારતના કાળમાં પરંપરા પ્રમાણે, પ્રભાસ તીર્થક્ષેત્ર હતું. ઐતિહાસિક દૃષ્ટિએ જોતાં ૫૦૦૦ વરસ પહેલાં સિંધુની ખીણમાં મહાદેવ પ્રભુ પૂજાતા માલમ પડે છે.

પુરાણમાં હકીકત આમ છે: દક્ષ પ્રજાપતિને ૨૭ કન્યાઓ હતી, અને તે બધીને ચંદ્રદેવ–સોમને પરણાવી હતી. આ બધીમાં રોહિણી સૌથી વધારે રૂપાળી હતી અને તેથી સોમનો તેના તરફ પક્ષપાત હતો. સ્વાભાવિક રીતે તેની બીજી સ્ત્રીઓ (સપત્નીઓ) એ—જો કે તે બધી બહેનો જ હતી—પોતાના પિતા દક્ષને ફરિયાદ કરી અને તેમણે પોતાની બધીય કન્યાઓ પ્રત્યે સરખો વર્તાવ રાખવા સોમને યુક્તિપ્રયુક્તિથી સમજાવ્યો. થોડા સમય પછી વળી સોમને રોહિણીનું આકર્ષણ દુર્નિવાર થઈ પડ્યું અને તે તેનામાં જ કેવળ મસ્ત રહેવા લાગ્યો. તેની બીજી સ્ત્રીઓએ ફરીથી પોતાના પિતાને ફરિયાદ કરી અને તેણે જો પોતાનું વલણ ન બદલે તો શાપ આપવાની ધમકી આપી. સોમે આ ધમકીને ગણકારી નહીં એટલે દક્ષે તેને શાપ આપ્યો, "તારો ક્ષય થશે."

પરિણામે ચંદ્રદેવ–સોમ દિવસે દિવસે ક્ષય પામતો ગયો. રોગમુક્ત થવાના પ્રયત્નોમાં તેણે યજ્ઞો કર્યા પણ તે નિષ્ફળ નીવડ્યા. તેનો તો ક્ષય થતો જ ગયો. ઔષધિઓ સ્વાદરહિત બની; વનસ્પતિ ઊગવા અસમર્થ નીવડી. દેવો ત્રાસી ઊઠ્યા. સોમનું શાપનિવારણ કરવા દક્ષને તેઓ કાલાવાલા કરવા લાગ્યા. અને આ શરતોએ તેમણે તેમ કરવા સ્વીકાર્યું: "સોમે પોતાની બધી પત્નીઓ સાથે સરખો વર્તાવ રાખવો જોઈએ, પ્રભાસતીર્થ આગળ જ્યાં સરસ્વતી નદી સાગરને મળે છે તેમાં સ્નાન કરવું જોઈએ, અને ત્યાં મહાદેવની સ્તુતિ કરવી; જો તે આ પ્રમાણે કરે તો માસના એક પક્ષમાં તે રોજરોજ ક્ષય પામતો જાય પરંતુ બીજા પક્ષમાં રોજરોજ વૃદ્ધિ પામતો જાય." અંતે દક્ષે સ્ત્રીઓની અને બ્રાહ્મણોની ઉપેક્ષા ન કરવાનું કહ્યું.

દક્ષની સલાહ મુજબ સોમ રોહિણી સહિત મરઘીના ઈંડાના આકારના સોમનાથના આ સ્પર્શલિંગની અર્ચના માટે નીચે પ્રભાસ ઉતરી આવ્યો.



૪૦૦૦ વરસની સોમની તપશ્ચર્યા પછી શિવ ભગવાન તેના પર પ્રસન્ન થયા. તેના ઉપર કૃપા કરી અને તેને શુકલ પક્ષમાં વૃદ્ધિ પામવાનું અને પ્રકાશવાનું સામર્થ્ય બક્ષ્યું. આ સ્થળે સોમે પોતાનો ભાસ (પ્રકાશ) પુનઃ પ્રાપ્ત કર્યો એટલે આ જગા પ્રભાસ નામે ઓળખાઈ.

બ્રહ્માએ પોતે સોમ અને તેની વહાલસોયી પ્રિયતમા રોહિણીને સોમનાથના મંદિરની સ્થાપના માટે પ્રેરણા આપી. બ્રહ્માએ પૃથ્વીને ભેદી અને સૌએ મરઘીના ઈંડાના કદનું શિવનું ઝળહળતું સ્વયંભૂ સ્પર્શલિંગ જોયું. એ મધ અને દર્ભાંકુરોથી છવાયેલું હતું. એના પર બ્રહ્મશિલા મૂકવામાં આવી હતી; અને એનીય ઉપર સાક્ષાત બ્રહ્માએ સોમનાથ પ્રભુના મોટા લિંગની સ્થાપના કરી હતી. પછીથી વૈદિક મંત્રો વડે તેની અર્ચના થઈ હતી.

સ્કન્દ પુરાણના પ્રભાસ ખંડ (૨–૮૨ અને ૮૩) માં સોમનાથ લિંગનું આ પ્રમાણે વર્ણન છે: "સૂર્યમંડળની પ્રભા જેવું દેદીપ્યમાન તે મહાશક્તિનું સ્વયંભૂ લિંગ છે, સર્પથી વીંટળાયેલું છે, મરઘીના ઈંડા જેવડું એનું કદ છે, સ્પર્શલિંગ એ કહેવાય છે અને ભૂગર્ભમાં રહેલું છે."

ભારત યુદ્ધના દિવસોમાં પશ્ચિમ કાંઠે પ્રભાસ બધાં સ્થળોમાં સૌથી વધારે પવિત્ર હતું. ઋષિઓ–મુનિઓ પણ ત્યાં એકઠાં મળતાં. ઈંદ્ર અને સૂર્ય–એ બે દેવોનું માનીતું ધામ હતું. બધાં પાપનિવારણ કરવાનો એનો ગુણધર્મ હતું; પ્રભાસનું

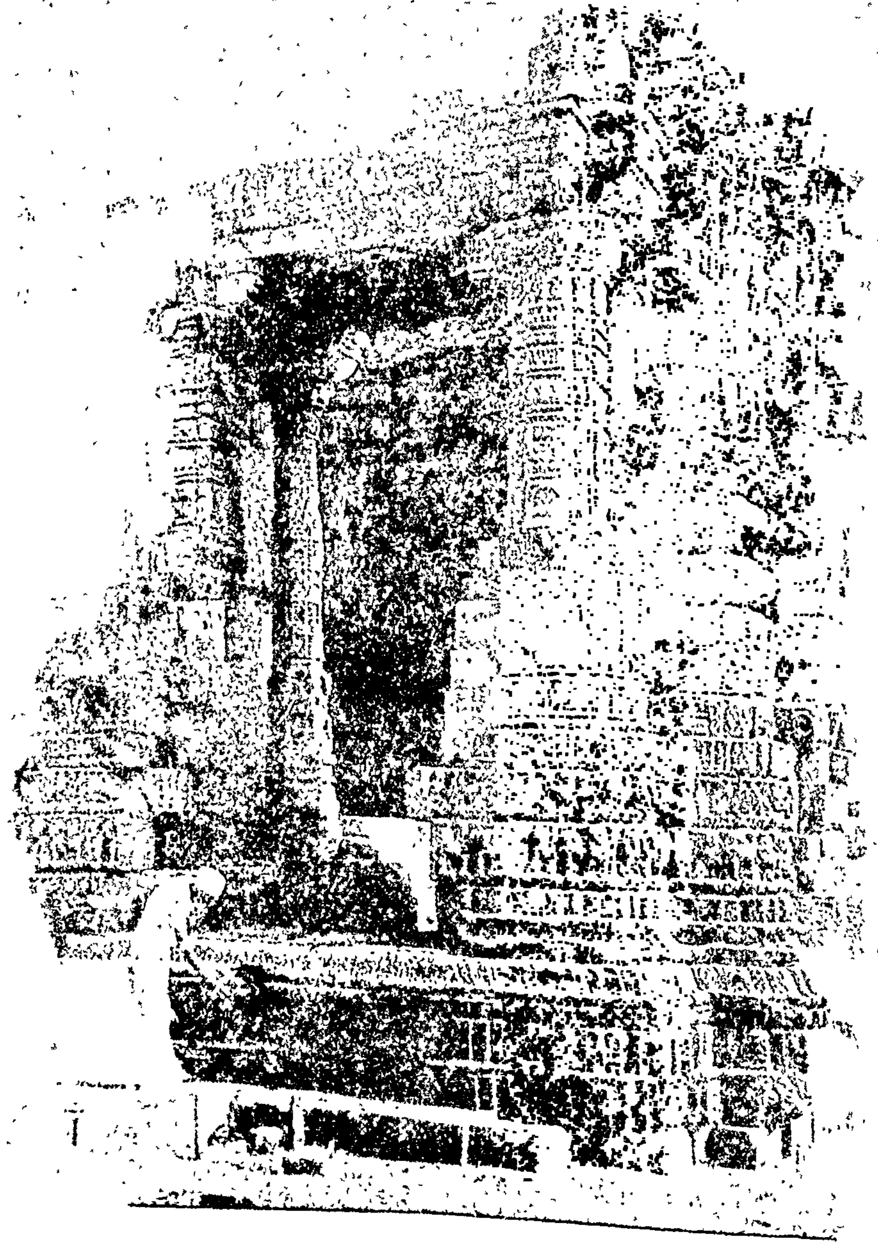
કવર : પાર્વતી મંદિર સાથે જૂના દેવાલયનું સામાન્ય દૃશ્ય.
ડાબી બાજુએ : સોમનાથના નૂતન મંદિરનું પૂર્ણ ચિત્ર.

સમુદ્રસ્નાન વ્યક્તિને સ્વર્ગે લઇ જનારું હતું. પાંડવો આ પવિત્ર ધામે આવ્યા હતા અને તેમણે તપશ્ચર્યા કરી હતી. શ્રીકૃષ્ણ અને બળરામે એમ જ કર્યું હતું; દ્વારકા જતાં રસ્તામાં ગોકર્ણથી અર્જુન અહીં આવ્યો હતો. જન્મેજય પરીક્ષિતરાય પણ અહીં આવી ગયા હતા; શ્રીકૃષ્ણ યાદવોને સૌરાષ્ટ્ર લઇ આવ્યા તે પહેલાં ઘણા સમયથી પ્રભાસ આખાય દેશમાંથી યાત્રાળુઓને આકર્ષતું પવિત્ર સ્થળ બન્યું હતું.

ત્યાં સ્નાન કરીને અને મંદિરમાં શિવની આરાધના કરીને સોમે પોતે ક્ષયના–શાપમાંથી મુક્તિ મેળવી હતી એ હકીકતમાંથી, ત્યારે પણ આ સ્થળનું માહાત્મ્ય હતું એમ અનુમાન ઉપલબ્ધ થાય છે. તેથી પ્રભાસના દેવતાની પવિત્રતાનો તે સમયે પણ અંગીકાર થયેલો હતો.

પૂજાવિધિ પ્રાગૈતિહાસિક કાળથી અને અત્યારે પણ શિવ અને એની સતી સહચરી શક્તિની પૂજા; ભારતવર્ષમાં ધાર્મિક માન્યતાનો મૂળભૂત સ્તર છે. સૌથી પહેલાંનું શૈવસાહિત્ય યોગથી જ માત્ર નહીં પણ જાદુ અને મંત્રશક્તિથી પણ જોડાયેલું છે. પ્રભાસ મહાશિવયોગીઓનું કેન્દ્ર હતું, અને પુરાણોમાં ઉલ્લેખ છે એવા કેટલાક મોટા ઋષિમુનિઓ એમની પવિત્ર વિદ્યા–સોમવિદ્યાના મહારથીઓ હતા. સોમ શિવની સાથે બહુ ગાઢો સંબંધ ધરાવતા માલુમ પડે છે, અને તે એટલે સુધી કે એમનાં અનેક નામોમાં એ (સોમ) પણ એક અભિધાન આપવામાં આવ્યું છે. સોમવિદ્યા પ્રમાણે અમાસ શિવને પવિત્ર છે અને તેમની પૂજા માટે ઘણી જ અનુકૂળ ગણાય છે; તે દિવસે આચરેલું કોઈ પણ ધાર્મિક કાર્ય અનેક ગણાં પુણ્ય આપણારું મનાય છે.

જે પ્રભાસને સૌથી વધુ ધાર્મિક ગૌરવ અર્પે છે તે આ પાંચ ગુણધર્મો સ્કંદપુરાણ વર્ણવે છે: "સરસ્વતી, નદી, સમુદ્ર, અસ્તચંદ્ર અને સોમનાથ દેવનાં દર્શન." સોમવતી અમાવાસ્યાએ પ્રભાસની યાત્રા કરવી, ઉપવાસ કરવો, સરસ્વતીના સાગર સાથેના સંગમમાં સ્નાન કરવું અને સોમનાથનાં દર્શન કરવાં—આ બધું અગણિત ધાર્મિક યજ્ઞોનું પુણ્ય આપે છે.



જૂના મંદિરમાંના 'પ્રદક્ષિણા માર્ગ'ની ઝરૂખાવાળી બારી

લકુલીશ સ્કન્દપુરાણ પ્રમાણે પાશુપત સંપ્રદાયના બ્રાહ્મણો સોમનાથના મંદિરની પૂજાવિધિ કર્યા કરતા. સંપ્રદાયનો સ્થાપક લકુલીશ ઈ. સ. ના બીજા સૈકામાં થઈ ગયો. નર્મદાને કાંઠે કારવણ ગામમાં તે જન્મ્યો હતો, પ્રભાસ આવ્યો હતો અને તેણે પાશુપત દર્શનનો બોધ કર્યો હતો. પ્રભાસમાં લકુલીશની પ્રતિમાનું સ્થાપન કરવામાં આવ્યું હતું. પાશુપત સૂત્રો ૧૬૮ ની સંખ્યામાં છે, અને સદ્યોજાત, વામદેવ, અઘોર, તત્પુરુષ તથા ઈશાન એમ પાંચ ભાગમાં છે. સૂત્રો મહાદેવની પૂજા અને એનુ સાયુજ્ય મેળવવાનું શીખવે છે. તૈત્તિરીય આરણ્યકના દસમા અધ્યાય પર આ પદ્ધતિ આધાર રાખે છે.

લકુલીશ શિવનો અવતાર મનાય છે, અને જે કાર્તિકી પૂર્ણિમાએ એની પ્રતિમાને અભિવંદન કરે છે તે સાત જન્મ સુધી અખૂટ સમૃદ્ધિ પ્રાપ્ત કરે છે, અને દેવોના કૃપાપાત્ર બને છે.

तस्यैव पूर्वदिग्भागे लकुलीशस्तु मूर्तिमान् ।
स्वयं तिष्ठति देवेशि कृत्वा घोरं तपः पुरा ॥
संस्थितः पापशमने तत्र स्थाने तलोपरि ।
कार्तिक्यां कृत्तिकायोगे यस्तं पूजयते नरः ॥
स पूज्यते महादेवि सर्वैरपि सुरासुरैः ॥ (સ્કં. પુ.)

★

દેહોત્સર્ગ હસ્તિનાપુરની ગાદીએ યુધિષ્ઠિરને સ્થાપીને શ્રીકૃષ્ણ દ્વારકા પાછા પધાર્યા. યુધિષ્ઠિરે આદરેલા અશ્વમેધ યજ્ઞમાં હાજરી આપવા તેઓ ફરીથી હસ્તિનાપુર આવ્યા હતા. તેઓ દ્વારકા પાછા આવ્યા અને હવે શેષજીવન સુખેથી ગાળવા લાગ્યા. એક વખત ઉત્સવ અર્થે યાદવો પ્રભાસ ગયા. ત્યાં નિર્બાધ રીતે તેઓએ દારૂ ઢીચ્યો અને પછી પરસ્પર વિનાશક એવા ઘોર સંગ્રામમાં પડ્યા. અંદર અંદર કપાઈ મૂઆ. તેના પરિણામે આખી યે યાદવ જાતિ વિનાશ પામી; માત્ર શ્રીકૃષ્ણ, એમના ભાઈ બળરામ અને બીજા બે દારુક અને બભ્રુ–એટલા જ એમાંથી ઉગર્યા.

પછીથી આ સમાચાર આપવા તેમ જ યદુવંશની સ્ત્રીઓ અને એના બાળકોના રક્ષણાર્થે દ્વારકા આવવાના સંદેશા સાથે પોતાના સારથિ દારુકને શ્રીકૃષ્ણે હસ્તિનાપુર મોકલ્યો. પછીથી તેમણે અનાથ સ્ત્રીઓ અને બાળકોને આશ્વાસન આપ્યું; દ્વારકા સાગરમાં વિલીન થઈ જશે એ અભિજ્ઞાન તેઓ પહેલેથી પામી ગયા હતા એટલે સૌ અર્જુનની

[illegible] તેમણે દ્વારકા છોડ્યું [illegible]

[illegible] અને મથુરાની [illegible] અને કૃષ્ણની [illegible]

[illegible] શિકારીએ [illegible] જ્યાં ઘવાયા [illegible] અને પુરાણો [illegible] છે, છતાં [illegible] પ્રભાસમાં કર્યો હતો. [illegible] મંદિરથી [illegible] દૂર [illegible] ભાલકાતીર્થ [illegible] છે. [illegible] સંગમ—આગળ સોમનાથમાં [illegible] અગ્નિસંસ્કાર કરવામાં આવ્યો હતો. [illegible] આ [illegible] છે.

*

પહેલું અને બીજું દેવાલય

[illegible] સમયમાં સોમનાથનું દેવાલય [illegible] ભારતવર્ષમાં [illegible] મુખ્ય મંદિર તરીકે [illegible] એમ કહી શકાય. [illegible] મૂકી શકાય. [illegible]

[illegible] બીજું દેવાલય આશરે ઈ. સ. [illegible]

ઈ. સ. ૭૨૨ ની આસપાસ આરબોએ પોતાની નજર ભારત તરફ નાખી. ઈ. સ. ૭૨૫ માં સિંધના સુબેદાર જુનાયદે મારવાડ, ભરૂચ, ઉજ્જન, માલવા અને ગુર્જરદેશ જીતવા આરબ સૈન્યો મોકલ્યાં; એમની આગેકૂચ દરમ્યાન તેમણે સૌરાષ્ટ્રના રાજાને અને વલભીના રાજાને હરાવ્યા. ત્યારે વલભીનો વિનાશ થયો. વલભીના વિનાશના સમયની આસપાસ કાર્પટિકનો સોમેશ્વરની યાત્રાએ જવાનો ઉલ્લેખ પ્રબંધ ચિંતામણિમાં છે. બીજું દેવાલય આ સમયે નાશ પામ્યું હતું અથવા એનો જીર્ણોદ્ધાર કરવામાં આવ્યો હતો.

*

ત્રીજું દેવાલય (ઈ. સ. ૮૦૦)

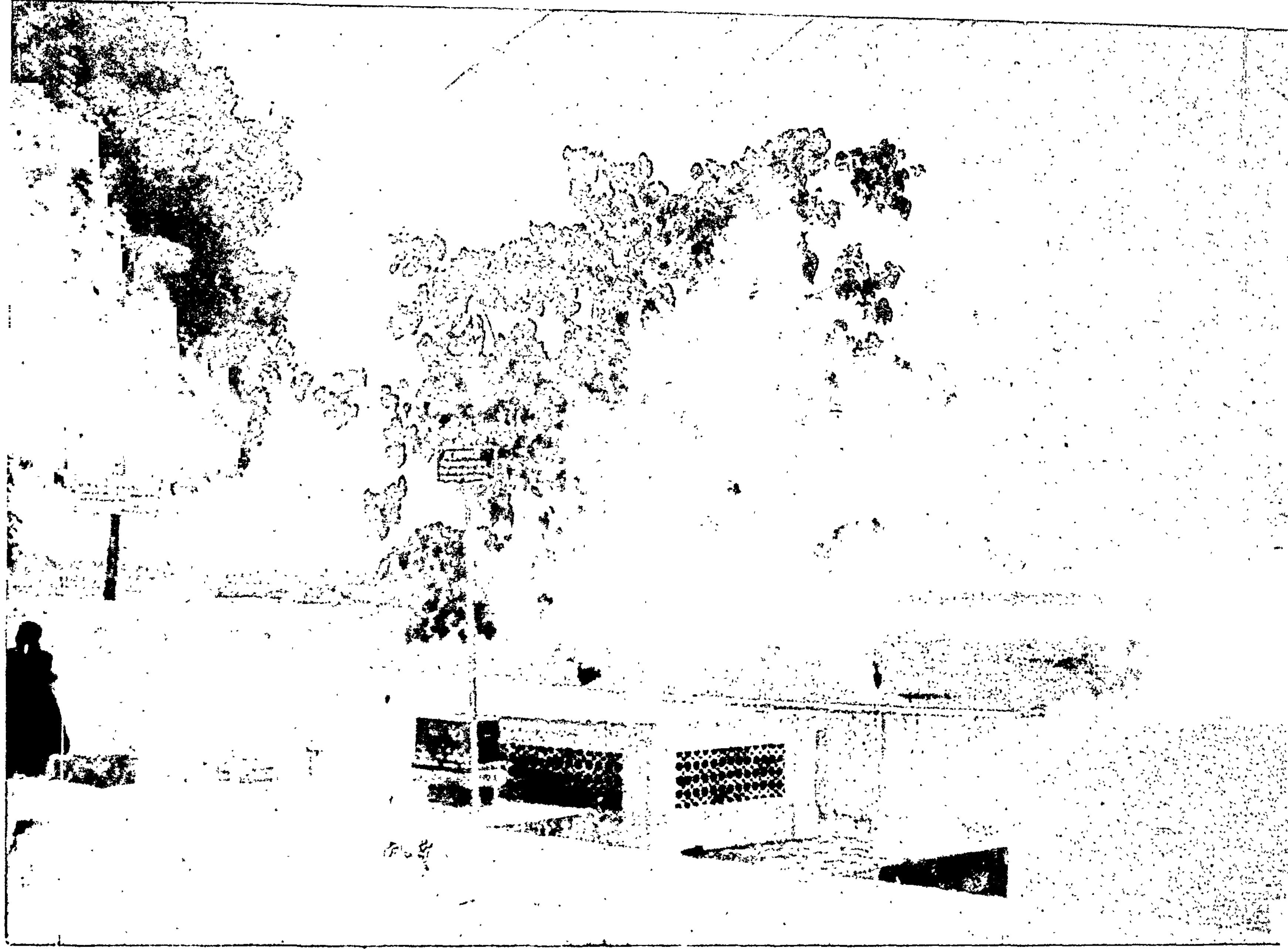
આશરે ૮મી સદીની પહેલી પચ્ચીશી દરમ્યાન સોમનાથનું મંદિર ઘણી અગત્ય ધરાવતું હતું. રાતા પથ્થરવાળું ત્રીજું દેવાલય એ જમાનાની સૌથી મોટી નિર્મિતિ. એને ઈ. સ. ૮૦૦ પછી ન મૂકી શકાય અને આ સમય દરમ્યાન એ બંધાઈ ગયું હોવું જોઈએ એમ કહી શકાય.

ઈ. સ. ૭૫૦ થી ૯૫૦ સુધી સૌરાષ્ટ્રની ચાલુક્ય શાખાએ રાજ્ય કર્યું. પ્રભાસ મોટું બંદર હતું અને સ્વાભાવિક રીતે સોમનાથ તેમના રક્ષક દેવતા હતા.

સ્કન્દપુરાણમાં પ્રભાસખંડનો આખો વિભાગ છે. એમાં સોમનાથનું, પ્રભાસનાં બીજાં મંદિરોનું અને એની સાથે જોડાયેલી પરંપરાઓનું સવિસ્તર વર્ણન આપેલું છે. કનોજના પ્રતિહારોના અમલ દરમ્યાન પ્રભાસ કાશી કરતાં વધુ નહીં તોય એના જેટલું મહત્ત્વ ધરાવતું પવિત્ર યાત્રાધામ બન્યું હતું એમ અનુમાન કરવું અનુપપન્ન નથી.

સૌથી પ્રથમ શિલાલેખનો પુરાવો ઈ. સ. ૯૬૦ નો મળી આવે છે. અણહીલવાડના ચાલુક્યોના સમય દરમ્યાન ઉત્તર સિન્ધર અનંતદેવ સૈન્ય સહિત સોમનાથની પૂજન માટે પ્રભાસમાં આવ્યા હતા એનો એમાં ઉલ્લેખ છે.

ઈ. સ. ૧૦૨૬ ના જાન્યુઆરીની ૬ ઠ્ઠી તારીખે મહંમદ ગિઝનીએ



અત્યારનું દેહોત્સર્ગનું સ્થળ

સોમનાથના કિલ્લા પર આક્રમણ કર્યું ત્યારે તે માંડલિકના તાબામાં હતો. રક્ષપાલો અપૂર્વ વીરતાથી લડ્યા. એક સમયે તો તુર્કોનું સૈન્ય નગરમાં પ્રવેશ્યું હતું તેને પણ રાત પડતાં પહેલાં તો તેમણે હાંકી કાઢ્યું. ૮ મીએ ખૂનખાર જંગ ખેલાયો; ૫૦,૦૦૦ ભારતીય વીર યોદ્ધાઓએ પ્રાણપ્રિય મંદિરના રક્ષણ માટે પોતાના પ્રાણ પાથરી દીધા. મહંમદે કિલ્લો હસ્તગત કર્યો, તે દવાલયમાં પ્રવેશ્યો, સદીઓની ભક્તિથી પૂત થએલા લિંગના ટુકડા કરી નાખ્યા, દેવાલય લૂંટ્યું અને બાળી ભસ્મીભૂત કરી નાખ્યું. સુંદર નાનકડા ચકમકના દાણાની છાંટવાળું ભૂખરિયા પથ્થરવાળું ત્રીજું દેવાલય ધૂળ ચાટતું થઈ ગયું.

★

ચોથું અને પાંચમું દેવાલય

ઈ. સ. ૯૯૫ અને ૧૦૭૫ વચ્ચે અણહીલવાડ પાટણના ચાલુક્ય રાજાઓ બહુજ ઝડપથી ઊંચા પદસ્થાને આરોહણ કરતા જતા હતા, અને તેમણે નવસારી તાલુકા સાથે લાટ (દક્ષિણ ગુજરાત) નો પ્રદેશ જોડી દીધો. લગભગ આ સમયે ગુર્જરભૂમિ શબ્દ આધુનિક ગુજરાત માટે વપરાવા લાગ્યો. સોમનાથનું દેવાલય (ચોથું દેવાલય) આ સમય સુધીમાં બંધાઈ ચૂક્યું હોવુંજ જોઈએ. ભારતના મુલાકાતી બધા આરબ મુસાફરો સોમનાથ પાટણની અગત્ય અને પવિત્રતાથી મુગ્ધ થતા હતા. અલ્બેરૂની એની અગત્ય વિશેની સાક્ષ પૂરે છે. ૧૧ મી સદીના મધ્યમાં આવેલા ઝૈન-અલ-અખબારે જણાવ્યું છે "હિંદુસ્તાનમાં સમુદ્રને કાંઠે સોમનાથનું મોટું નગર છે: જેમ મુસ્લિમોનું મક્કા તેમ હિંદુઓનું એ પવિત્ર ધામ છે."

સોમનાથ પાટણ કે દેવ પાટણ ભારતવર્ષની એક મોટી પણ્યધાની હતી, અને વિદ્યા અને ધાર્મિક જીવનનું એક મોટું પ્રવૃત્તિક્ષેત્ર હતું. ભાવ બૃહસ્પતિ આ પવિત્ર મંદિરના મુખ્યાધિકારી તરીકે ચાલુ હતા.

પોતાની અપુત્રાવસ્થા નિવારવા વૃદ્ધાવસ્થામાં સિદ્ધરાજ જયસિંહ વરદાન પ્રાપ્ત કરવા સોમનાથની યાત્રાએ ગયા હતા.

ઈ. સ. ૧૧૪૪ માં સિદ્ધરાજ પછી કુમારપાલ રાજગાદી પર આવ્યા. પૂજ્યપાદ ભાવ બૃહસ્પતિ મંદિરના જીર્ણોદ્ધાર માટે કુમારપાલ પાસે ગયા. મહારાજાએ સંમતિ આપી અને ભાવે 'મેરુપ્રસાદ' બંધાવ્યો, અને તે "કૈલાસ પર્વત જેવો ભવ્ય" દેખાવા લગ્યો તેણે માત્ર દેવાલયની નહીં પણ આખા નગરની પુનર્બાંધણી કરી હતી. દેવાલયની ઉત્તરે અને દક્ષિણે મજબૂત કિલ્લાની દીવાલો ઉમેરી તેને વિસ્તારવામાં આવ્યું હતું. ભાવે આ દેવાલય પર અને વળી ગૌરી, ભીમેશ્વર, કપર્દી (શિવ) સિદ્ધેશ્વર અને બીજા દેવતાઓના મંદિરો પર સુવર્ણનાં શીખરો મૂક્યાં. રાજાઓને એકઠા મળવા ત્યાં રાજગૃહ બંધાવ્યું ચોખ્ખા પાણી માટે એક જળાશય પણ બાંધવામાં આવ્યું. સોમનાથ દેવની સામે જ સુંદર અને મજબૂત સ્તંભવાળો મંડપ ઊભો કરવામાં આવ્યો, અને રજતની જળાધારી સાથે મણ્ડૂકના આકારનું દેવતાનું બેઠકસ્થાન બનાવ્યું. ત્રણ માણસોના જેટલી ઊંચાઈવાળી પ્રતિમાવાળું પાપમોચન દેવનું મંદિર બાંધવામાં આવ્યું, અને નદી સુધી જતાં પગથિયાંનાં ઓવારા બંધાવ્યા, બ્રાહ્મણોના નિવાસ માટે ઘણાં રહેઠાણો બાંધ્યાં; ચણ્ડિકાના મંદિર સાથે બે મોટી વાવ પણ બાંધવામાં આવી હતી.

આમ આ પાંચમું મોટું દેવાલય અસ્તિત્ત્વમાં આવ્યું. એના અવશેષોએ કાળના ઘા ખમ્યા અને સંહારકોનાં આક્રમણો પાર કરી તે આટલા વર્ષ ટકી રહ્યા. જીર્ણશીર્ણ, અસ્થિર અને દૂષિત તે ઊભું હતું ત્યારે સરદાર પટેલે એને ઉપેક્ષામાંથી ઉગાર્યું અને તેમણે એની પુનર્રચના માટે શપથ લીધા. ભારતવર્ષનાં શ્રદ્ધાઅ.સ્થા કેવાં હતાં તેની યુગેયુગે સ્મૃતિ આપી આ દેવાલયે પોતાનું અસ્તિત્વ સાર્થક કર્યું છે. ભારતવર્ષના ભૂલાઈ ગયેલ દુર્ભાગ્યના પ્રતીક રૂપેજ એ બચેલું છે. નવા યુગના અરુણોદય સાથે ફેનિકસની માફક એની રાખમાંથીજ નવું મંદિર ઊભું થાય છે.

પોતાના કાકા જલાલુદ્દીનનો વિશ્વાસઘાત કરી, એનું ખૂન કરી ઈ. સ. ૧૨૯૬ માં અલાઉદ્દીન ખિલજી સુલતાનપદ ધારણ કરી ગાદીએ બેઠો. સુરત, રાંદેર અને સમુદ્ર સુધી ખૂનરેજી ચલાવી અલાઉદ્દીનનું સૈન્ય સૌરાષ્ટ્ર તરફ વળ્યું, ઘણાં નગરોનો નાશ કર્યો અને પ્રભાસ તરફ ચાલી નીકળ્યું. સોમનાથના મંદિરનુ રક્ષણ કરવા રજપૂતોએ બધું બળ એકાગ્ર કર્યું અને દુશ્મનો સામે તેઓ બહાદુરીથી લડ્યા. પણ કિલ્લો પડ્યો અને મંદિરની સામે–જેના રક્ષણની તેઓએ ફોગટની આશા રાખી હતી–બહાદુર લડવૈયાઓ કેસરિયાં કરી લડતાંલડતાં ઢળી પડ્યા

દેવી પાર્વતી (નવું મંદિર)





દેવી પાર્વતી (નવું મંદિર)

અને તેઓ સોમનાથને શરણે ગયા. દેવાલય દુશ્મનોના હાથમાં આવી પડ્યું. અલફખાંએ મંદિર તોડી પાડ્યું, મૂર્તિને ભાંગી ટુકડેટુકડા કરી નાખ્યા અને એના અવશેષો એ દિલ્હી લઈ ગયો.

અલાઉદ્દીનના સરદારે દેવાલયનો વિનાશ કર્યો અને સોમનાથની મૂર્તિ ભાંગી, પછી તરત જ જૂનાગઢના ચૂડાસેન રાજા મહીપાલે એનો પુનરુદ્ધાર



કરાવ્યો. આશરે ઈ. સ. ૧૩૨૫ અને ૧૩૫૧ ના સમયના ગાળામાં એના પુત્ર ખેંગારે લિંગની સ્થાપના કરી.

ત્યાર પછી મહમદ બેગડાએ સોમનાથના મંદિરમાંથી લિંગ દૂર કર્યું (આશરે ઈ. સ. ૧૪૬૯) અને એને મસ્જીદમાં ફેરવી નાખ્યું. પણ કોઈ સમય દરમ્યાન મંદિર-પ્રાસાદ મસ્જિદ તરીકે વપરાયો ન હતો. ત્યાર પછી એમ જણાય છે કે મંદિરનો પાયો ઊંચો લેવામાં આવ્યો હતો; આ ઈ. સ. ૧૫૦૦ થી બહુ દૂરના સમયે હોઈ શકે એમ ન હતું.

આશરે ઈ. સ. ૧૫૭૭ માં જૂનાગઢનો કિલ્લો અકબરના કોઈ સૂબાએ લીધો હોય એમ લાગે છે. છતાં સોમનાથનું મંદિર તો અબાધિત રહ્યું.

બેગડાએ પાટણનો વિનાશ કર્યો ત્યાં સુધી તો પ્રભાસ તેની પવિત્રતા અને એના વેપાર માટે પ્રખ્યાતિ પામેલું હતું. ત્યાર પછી પ્રભાસ પાટણના બંદર તરીકેના હાલહવાલ ખરાબ થતા ચાલ્યા અને સુરત એક મોટી પણ્યધાની થઈ પડી.

ઈ. સ. ૧૭૮૩ માં ઈન્દોરનાં મહારાણી અહલ્યાબાઈએ જૂના ભંગારો દેવતાની સ્થાપના માટે અયોગ્ય ગણી, જૂના મંદિરથી થોડેક દૂર નવા મંદિરની રચના કરી. વિનાશમાંથી બચાવવા ઉપરના સામાન્ય લિંગની બરાબર નીચે આ લિંગને અંદર છુપા ભૂગર્ભના મંદિરમાં પધરાવ્યું.

આશરે ઈ. સ. ૧૮૦૦ માં વડોદરાના ગાયકવાડના હાથમાં સૌરાષ્ટ્રનું આધિપત્ય આવ્યું. ઈ. સ. ૧૮૧૧ માં જૂનાગઢનો નવાબ હમીદખાન મૃત્યુ પામ્યો અને રાજ્યની ગાદીના હક્કદાર વારસ તરીકે બહાદુરખાનની તરફેણમાં ગાયકવાડે નક્કી કરી આપ્યું હતું પણ સોમનાથના નવા મંદિરનાં કાબૂ અને વ્યવસ્થાનો હક્ક ગાયકવાડને સોંપાયો હતો.

ઈ. સ. ૧૮૧૩ માં કલમબંદી તરીકે જાણીતી આ સુલેહ થઈ. ઈ. સ. ૧૮૨૦ સુધી કશી ખટપટ વિના કામકાજ ચાલ્યા કર્યું. તથાપિ એજ વરસમાં કાઠિયાવાડનું સાર્વભૌમત્વ બ્રિટિશને સોંપાયું. આ પ્રસંગ પછી અહલ્યાબાઈના મંદિરે એની પ્રતિષ્ઠા ખોવા માંડી. અનેક વાર મુલતવી રહેલી મંત્રણાઓ અને કાઠિયાવાડના પોલિટિકલ એજન્ટની મધ્યસ્થવૃત્તિદ્વારા મેળવેલી અનુજ્ઞા પછી ગાયકવાડના રાજવીઓને અહલ્યાબાઈના મંદિરનો જીર્ણોદ્ધાર કરવાની રજા મળી હતી. પણ પ્રસંગો ખૂબ ઝડપથી બનતા જતા હતા. જૂનાગઢનો નવાબ પાકીસ્તાનનો સ્વીકાર કરી શકય એટલી સારી રીતે સરકાર ચલાવવાનું શાહનવાઝ ભૂતો પર છોડી, ત્યાં ચાલી ગયો.

ત્યારના જૂનાગઢના દિવાન શાહનવાઝ ભૂતોએ હિંદી સૈન્યને આમંત્રણ આપ્યું અને તે જૂનાગઢમાં પ્રવેશ્યું. નામદાર મહારાજા જામસાહેબ, કાકાસાહેબ ગાડગીલ અને શ્રી. મુનશી સાથે સરદાર પટેલ ઈ. સ. ૧૯૪૭ ના નવેમ્બરની ૧૨ મી તારીખે દિવાળીના દિવસે જૂનાગઢ ગયા. ત્યારે સોમનાથ મંદિરનો પુનરૂદ્ધાર કરવાનો નિર્ણય લીધો અને સરદાર પટેલે નીચેના શબ્દોમાં જાહેરાત કરી :

"નવા વરસના આ મંગળ દિને અમે નક્કી કર્યું છે કે સોમનાથનો પુનરૂદ્ધાર કરવો જોઈએ. તમારે-સૌરાષ્ટ્રના રહેવાસીઓએ-બનતું બધું કરવું જોઈએ. આ પવિત્ર કાર્યમાં સૌએ યત્કિંચિત્ ફાળો ભરવો જોઈએ."

હિંદના લોકમતની અનુમતિ સહિત નક્કી કરવામાં આવ્યું કે જીર્ણશીર્ણ અને ખંડિયેર અવસ્થામાં રહેલા સોમનાથના મંદિરનો જીર્ણોદ્ધાર કરવો જોઈએ, અને એની પુરાણી પ્રતિષ્ઠા પ્રમાણે એની પુનર્રચના પણ કરવી જોઈએ, અને એમાં શિવ ભગવાનની નવી મૂર્તિની પ્રતિષ્ઠા કરવી જોઈએ. સોમનાથ મંદિરના પુનર્નિર્માણ માટે ઈ. સ. ૧૯૫૦ ની ૮ મી મેએ નવાનગરના નામદાર મહારાજા જામસાહેબે એનો શિલારોપણ વિધિ કર્યો, અને એ પછી બાંધકામના પહેલા તબક્કાનું ચણતર હાથ પર ધરવામાં આવ્યું. ગણરાજ્યના રાષ્ટ્રપતિ ડૉ. રાજેન્દ્રપ્રસાદે ઈ. સ. ૧૯૫૧ ના ૧૧ મી મેએ લિંગપ્રતિષ્ઠાનો વિધિ કર્યો.

બાંધકામના છેલ્લા તબક્કાનું ચણતર આગળ વધી રહ્યું છે અને ટૂંક સમયમાં આખાય મંદિરની રચના પૂરી કરી નાખવાની આશા, સોમનાથ ટ્રસ્ટના ટ્રસ્ટીઓ સેવી રહ્યા છે.



નવા મંદિરના પૂર્વ દરવાજાની છતમાં 'રાવણ કૈલશ ઉંચકે છે' તેનું દૃશ્ય.

પાટણ (પ્રભાસ) નાં તીર્થસ્થળો

ભાલકા તીર્થ અને દેહોત્સર્ગ

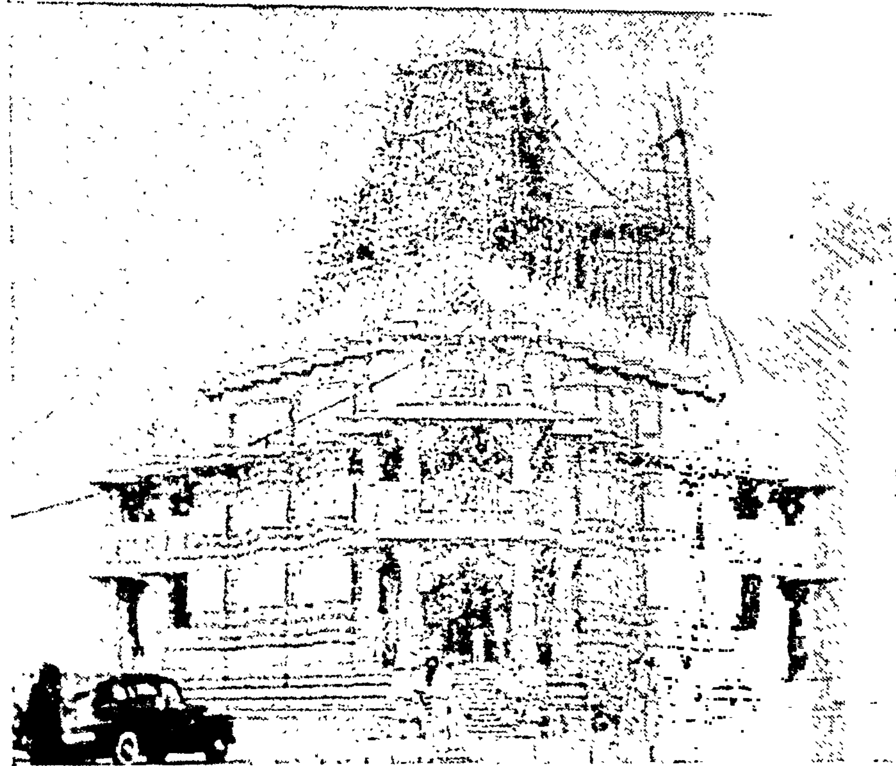
વેરાવળ અને પાટણ વચ્ચે ભાલકા તીર્થ આવેલું છે. શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન આ સ્થળે એક વૃક્ષ નીચે વિશ્રાંતિ લેતા હતા ત્યારે, તેઓ ભીલ શિકારીના બાણ વડે પગે ઘવાયા હતા.

શ્રીકૃષ્ણે દ્વારકા છોડ્યું, તેઓ પ્રભાસ આવ્યા અને ત્યાં આ ક્ષણભંગુર દેહનો ત્યાગ કર્યો. યાદવો દારૂમાં ચકચૂર બન્યા, તેમણે આપસઆપસમાં ખૂનખાર જંગ ખેલ્યો અને અંદરઅંદર કપાઈ મૂઆ. બ્રહ્મા, વિષ્ણુ અને શિવ આ ત્રણેય દેવતાઓનાં સ્વરૂપતત્ત્વો અહીં વાસ કરીને રહેલાં હોવાથી શ્રીકૃષ્ણે દેહોત્સર્ગ માટે આ સ્થળની પસંદગી કરી એમ સ્કંદપુરાણ વર્ણવે છે; આ સ્થળનું એટલું બધું માહાત્મ્ય છે કે પાપી મનુષ્ય જો અહીં મૃત્યુ પામે તો તે પણ મોક્ષ મેળવે. બરાબર જે સ્થળે શ્રીકૃષ્ણે દેહોત્સર્ગ કર્યો હતો, એ જગા 'ભલ્લ તીર્થ' કે 'ભાલકા' ને નામે ઓળખાય છે. વેરાવળ અને પાટણની વચ્ચે ઈશાન બાજુએ આ સ્થળ આવેલું છે. જ્યારે શ્રીકૃષ્ણ વૃક્ષ નીચે વિશ્રામ લેતા હતા, ત્યારે જરા નામના શિકારીએ તેમને હરણ માની પગમાં બાણ માર્યું અને ભગવાન શ્રીકૃષ્ણ યોગસમાધિમાં પોઢી ગયા. આમ વિધિના [illegible] શ્રીકૃષ્ણે પોતાનું કાર્ય સમાપ્ત કર્યું, આ મર્ત્ય જીવનમાંથી પોતાની લીલા સંકેલી લીધી, અને આ સ્થળે શાશ્વત દિવ્યતામાં



ભાલકાતીર્થના એક મંદિરમાં ભગવાન શ્રીકૃષ્ણ

નવા મંદિરમાં નટરાજની પ્રતિમા



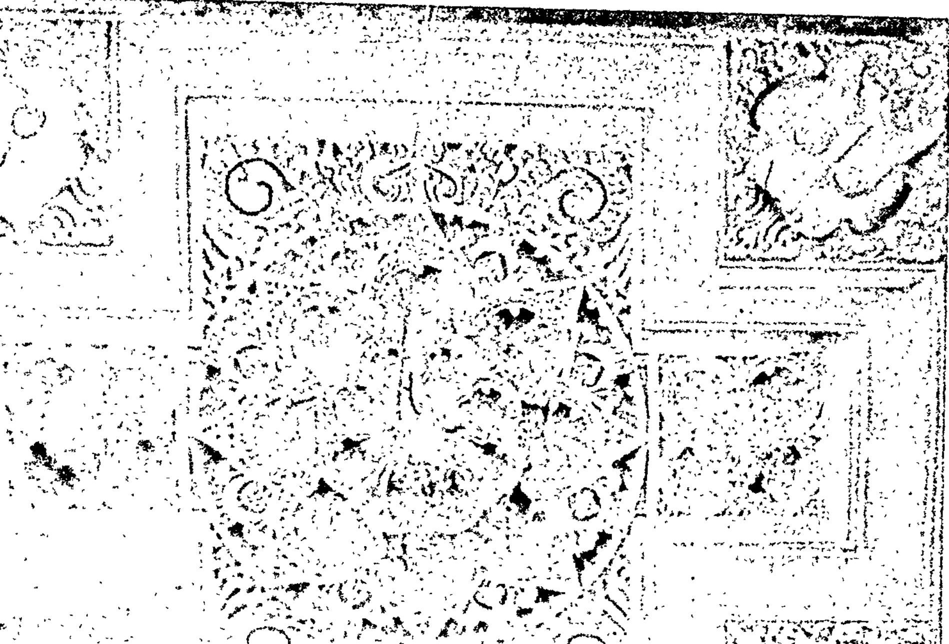
છેલ્લા મજલા સુધી પહોંચેલ નવા મંદિરનું દૃશ્ય

પ્રવેશ કર્યો. ચાંદ્રમાસની દ્વાદશીએ જે ભાલકા કુંડમાં સ્નાન કરે છે તે ખૂબ પુણ્ય મેળવે છે. શ્રીકૃષ્ણે ભાલકાતીર્થ આગળ દેહત્યાગ કર્યો હતો; પણ તેમનો અંતિમ અગ્નિસંસ્કાર ત્રિવેણી આગળ થયો હતો, અને તે 'દેહોત્સર્ગ' તરીકે ઓળખાય છે. હિરણ્ય નદીના કાંઠે આ જગા આવેલી છે.

શ્રી અહલ્યાબાઈનું શિવ ભગવાનનું મંદિર :

ઈન્દોરના હોલકરનાં મહારાણી અહલ્યાબાઈએ સોમપુરના કિલ્લામાં સોમનાથ દેવનું નવું મંદિર બંધાવ્યું હતું. મૂળ દેવાલયથી તે થોડેક દૂર છે. આ મંદિર ભૂગર્ભમાં છે; ઈ. સ. ૧૭૮૩ માં અક્ષય તૃતીયાએ એનું ખાતમુહૂર્ત કરવામાં આવ્યું હતું અને ઈ. સ. ૧૭૮૮ માં-જ્યેષ્ઠ માસમાં ત્યાં પ્રતિષ્ઠાપન વિધિ કરવામાં આવ્યો હતો. ઉપરના ભાગમાં અહલ્લાવારા

નવા મંદિરની ઉત્તર અને દક્ષિણ બાજુના દરવાજાની છતમાંનું કોતરકામ



મહાદેવ છે. જૂનાગઢના નવાબના શાસન દરમ્યાન પણ પૂજાના હક્ક અને એનો કારભાર વડોદરાના ગાયકવાડના હાથમાં હતા.

પાટણનો ત્રિવેણી ઘાટ :

જે સ્થળે શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન બાણ વડે ઘવાયા હતા એ સ્થળ "ભલ્લતીર્થ" કે "ભાલકા" ને નામે ઓળખાય છે. પણ અરબીસમુદ્રને મળતી આ ત્રણ નદીઓ—હિરણ્ય, સરસ્વતી અને કપિલા—ના ત્રિવેણી સંગમ આગળ અગ્નિસંસ્કાર કરવામાં આવ્યો હતો. આ ત્રિવેણી ઉપર ઘાટ અને પીપળાનાં વૃક્ષોનો સમૂહ છે. આ જગા પણ 'દેહોત્સર્ગ' તરીકે ઓળખાય છે. જેમ સોમનાથ શૈવોનું તીર્થધામ, તેમ સોમનાથ પાસેની આ જગા બધા હિંદુઓ અને તેમાંયે ખાસ કરીને વૈષ્ણવોનું તીર્થધામ છે. કારણકે શ્રીકૃષ્ણે પોતાના જીવનના અંતિમ દિવસો અહીં ગાળ્યા હતા અને આ ભાગમાં પોતાના ક્ષણભંગુર દેહનો ત્યાગ કર્યો હતો.

બળદેવજીની ગુફા :

શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનના મોટાભાઈ શ્રી બળદેવજી અહીં પાતાળમાં ગયા હતા. આ જગા દેહોત્સર્ગના ભાગમાં આવેલી છે.

શશિભૂષણ મહાદેવનું મંદિર :

વેરાવળથી પાટણ જતાં રસ્તામાં જમણી બાજુએ શશિભૂષણ મહાદેવનું મંદિર આવે છે. એમ કહેવાય છે કે ચંદ્રે-સોમે પોતાના શાપ નિવારણાર્થે આવા સ્થળે યજ્ઞ કર્યો હતો. વળી એમ પણ કહેવામાં આવે છે કે જર શિકારીએ આ સ્થળેથી શ્રીકૃષ્ણને બાણ માર્યું હતું. નજીકમાં 'ભીડભંજન ગણપતિ' મંદિર છે અને તે 'ભીડિયા'ને નામે ઓળખાય છે.

મહાપ્રભુજીની બેઠક :

ત્રિવેણીએ, દેહોત્સર્ગ તીર્થ આગળ વૈષ્ણવાચાર્ય શ્રી વલ્લભાચાર્યે શ્રીમદ્ ભાગવતનું સાત દિવસ સુધી 'પુરશ્ચરણ' કર્યું હતું. શ્રી વલ્લભાચાર્ય મહાપ્રભુજીના પુષ્ટિમાર્ગ અનુસાર જ્યાં શ્રી મહાપ્રભુજીએ ભાગવત પારાયણ કર્યું હતું એવી આખા હિંદુસ્તાનમાં પથરાયેલી આવી ૮૪ જગાઓ છે. સ્વાભાવિક રીતે જ આવા પારાયણ માટે શ્રી વલ્લભાચાર્યજીએ દેહોત્સર્ગના પવિત્રધામ વાળી જ જગા પસંદ કરી હતી તેથી આ જગા શ્રીમહાપ્રભુજીની બેઠક તરીકે પાવનકારી મનાય છે.

રુદ્રેશ્વર મહાદેવ અને સૂર્યમંદિર :

શ્રી સોમનાથ મંદિરથી દેહોત્સર્ગ જતાં રસ્તામાં આ બે દેવાલયો આવે છે.

મહાકાલિકાનું મંદિર :

ત્રિવેણીસંગમ આગળ 'દેહોત્સર્ગ' વાળી અગ્નિસંસ્કારની જગા પાસે આ મંદિર આવેલું છે.

વેણેશ્વર મહાદેવનું મંદિર :

વજ્ર કાકોરની દીકરી અહીં પૂજા કરતી અને મહાદેવમાં જ સમાઈ ગઈ હતી.

દૈત્યસૂદન :

(પાટણ શહેરમાં) વિષ્ણુ ભગવાનની પ્રતિમા છે; ઈ. સ. ની સાતમી સદીની આ મૂર્તિ મનાય છે.



નવા મંદિરનો એક નકશી કરવલો

મહાકાલી મંદિર :

પાટણમાં અહલ્યાબાઈના મંદિરની પાસે આવેલું છે.

પાટણ (પ્રભાસ) ની આસપાસનાં તીર્થસ્થળો

પ્રાચી :

વેરાવળ ઊનાને રસ્તે આ સ્થળ પાટણ (પ્રભાસ)થી ૧૩ માઈલ દૂર છે, ત્યાં 'મોક્ષ પીપળો' પણ છે. પ્રભાસ પાટણમાં ત્રિવેણીસંગમે ધાર્મિક વિધિ પતાવ્યા પછી આ પીપળાની આસપાસ જળ સિંચન કરી પ્રદક્ષિણા કરવા યાત્રાળુઓ જાય છે. સરસ્વતીને કાંઠે શ્રી માધવરાયની પ્રતિમા પણ છે.

રેલ્વે, દરિયાઈ અને હવાઈ માર્ગો માટેની માહિતી

રેલ્વે માર્ગ પાટણ (પ્રભાસ) આવવા માટે છેવટનું સ્ટેશન વેરાવળ છે. એ વેસ્ટર્ન રેલ્વે ઝોનમાં આવેલું છે. મુંબઈ તરફના મુસાફરો અમદાવાદ, ધોળકા, ધોલા, જેતલસર અને જૂનાગઢ થઈને સોમનાથ મેલમાં વેરાવળ આવી શકે. આ મેલ લગભગ બપોરના સવા વાગ્યે ત્યાં આવી પહોંચે છે. વીરમગામ, જેતલસર અને જૂનાગઢ થઈને પણ તેઓ અહીં આવી શકે છે.

દિલ્હી તરફના મુસાફરો મહેસાણા, વીરમગામ, રાજકોટ, જેતલસર અને જૂનાગઢ થઈને આવી શકે છે.

દરિયાઈ માર્ગ સપ્તાહમાં એક વાર મુંબઈથી વેરાવળ ગુરુવારે એક બોટ આવી પહોંચે છે. અને દરેક રવિવારે વેરાવળ બંદરથી મુંબઈ માટે એક બોટ ઉપડે છે. આ માર્ગ ચોમાસામાં બંધ રહે છે.

હવાઈ માર્ગ સોમવાર, બુધવાર અને શુક્રવારના દિવસોએ મુંબઈથી કેશોદનો વિમાન વ્યવહાર ચાલુ હોય છે.

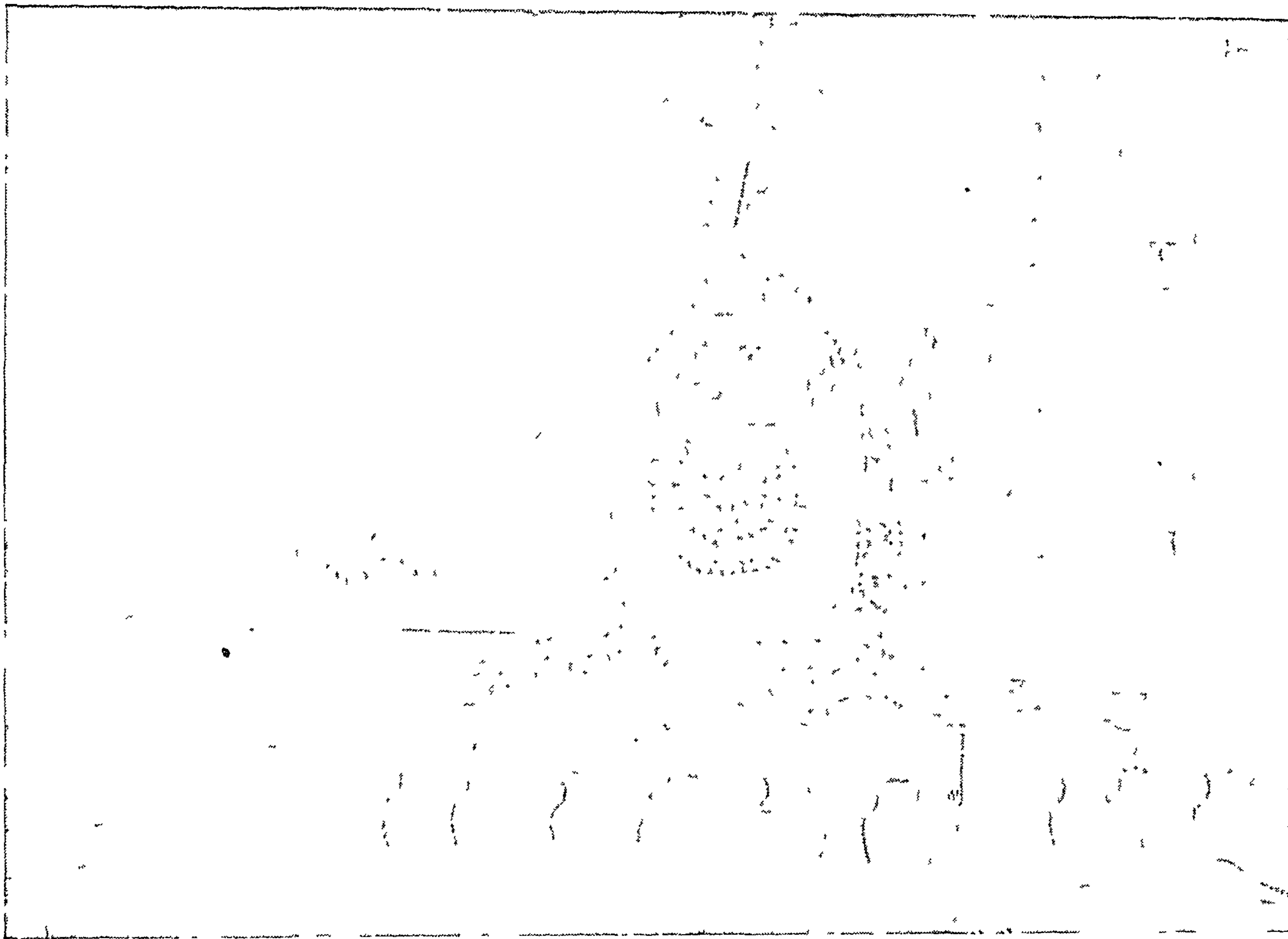
વાહનવ્યવસ્થા વેરાવળ સ્ટેશને, શહેરમાં તેમ જ પ્રભાસપાટણમાં ઘોડાવાળા ટાંગાઓ મળે છે. સૌરાષ્ટ્ર સરકારનું વાહનવ્યવહાર ખાતું વેરાવળથી પાટણની એક બસ ઉપાડે છે; એનો સમય સવારના ૮ થી સાંજના ૬ સુધીનો છે. વેરાવળમાં પાટણ દરવાજા આગળ બસ સ્ટેન્ડ છે. ત્યાંથી પાટણ માટેની બસ ઉપડે છે. વેરાવળ સ્ટેશનથી પાટણનું અંતર લગભગ ત્રણ માઈલ જેટલું છે.

વેરાવળ અને પાટણ (પ્રભાસ)માં ઉતરવા માટેની જગાઓ વેરાવળ શ્રી રામ ધર્મશાળા, રેલ્વે સ્ટેશનથી પાટણ (પ્રભાસ) ૧. શ્રી ભાટિયા ધર્મશાળા. ૨. શ્રી કંસારા ધર્મશાળા (ગોવર્ધન ભુવન તરીકે ઓળખાય છે.)

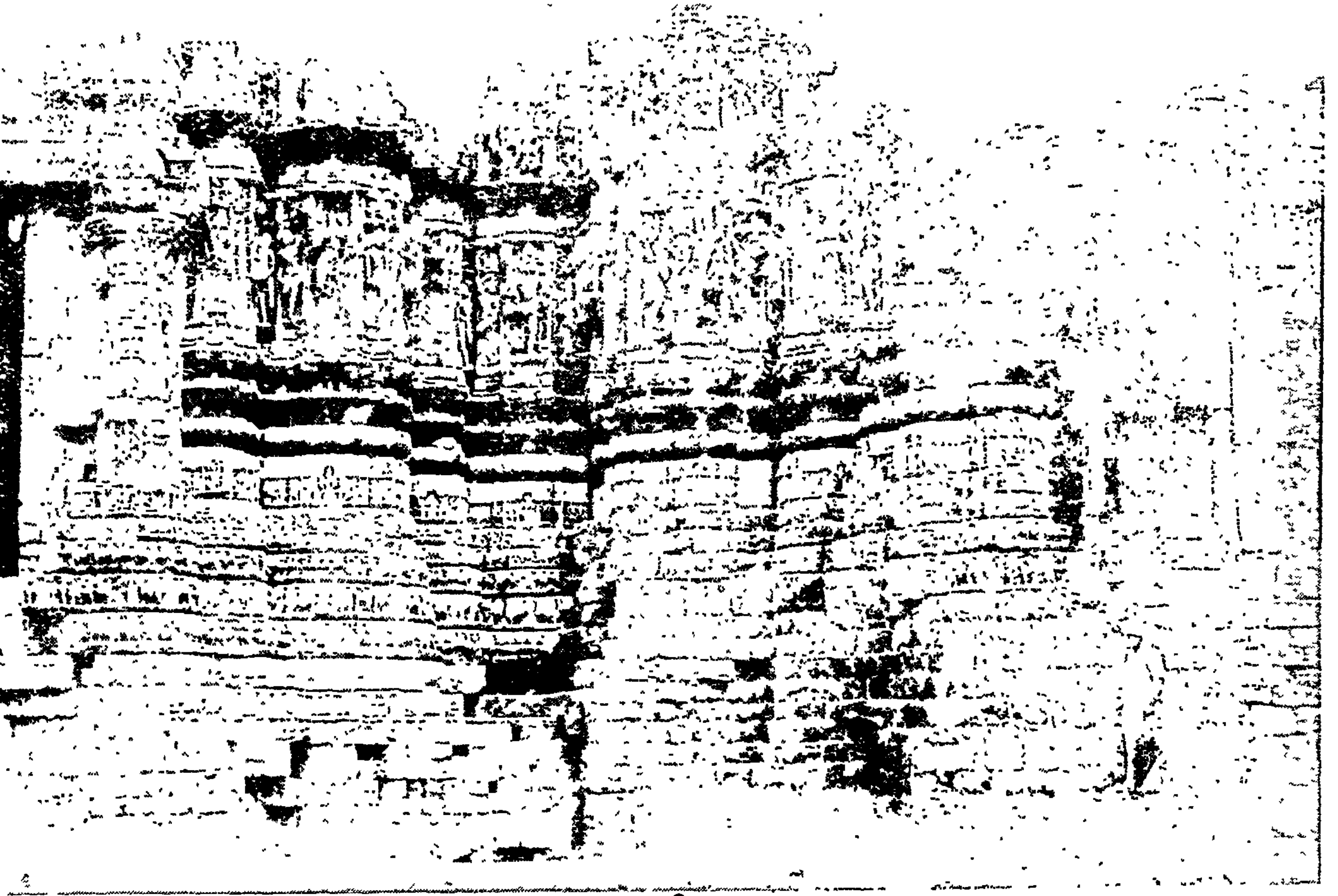
જમવા રહેવાની સગવડવાળાં સ્થળો વેરાવળમાં આશરે ચારપાંચ બોર્ડિંગ હાઉસ છે; પાટણમાં શ્રી સોમનાથ મંદિરની પાસે એક બોર્ડિંગ હાઉસ છે. તેમજ પ્રભાસ પાટણ મહિલા મંડળ તરફથી મંદિરના કમ્પાઉન્ડની નજીક જ એક ભોજનાલય અને ઉપાહાર ગૃહ યાત્રીઓની સગવડતા માટે ચલાવાય છે.

પોસ્ટ અને ટેલિગ્રાફ ઓફિસ વેરાવળ અને પાટણમાં પોસ્ટ અને ટેલિગ્રાફ ઓફિસ છે. વેરાવળની પોસ્ટ ઓફિસોમાંથી ટ્રંકકોલ કરી શકાય છે.

મુદ્રક : શ્રી. પી. એચ. રામન, એસોસિએટેડ એડવર્ટાઈઝર્સ એન્ડ પ્રિન્ટર્સ, ૫૦૫, આર્થર રોડ, તારદેવ, મુંબઈ-૭.
પ્રકાશક : શ્રી. પ્ર. હી. પ્રેમાણી, સોમનાથ ટ્રસ્ટ વતી, રાજમહલ, જામનગર.



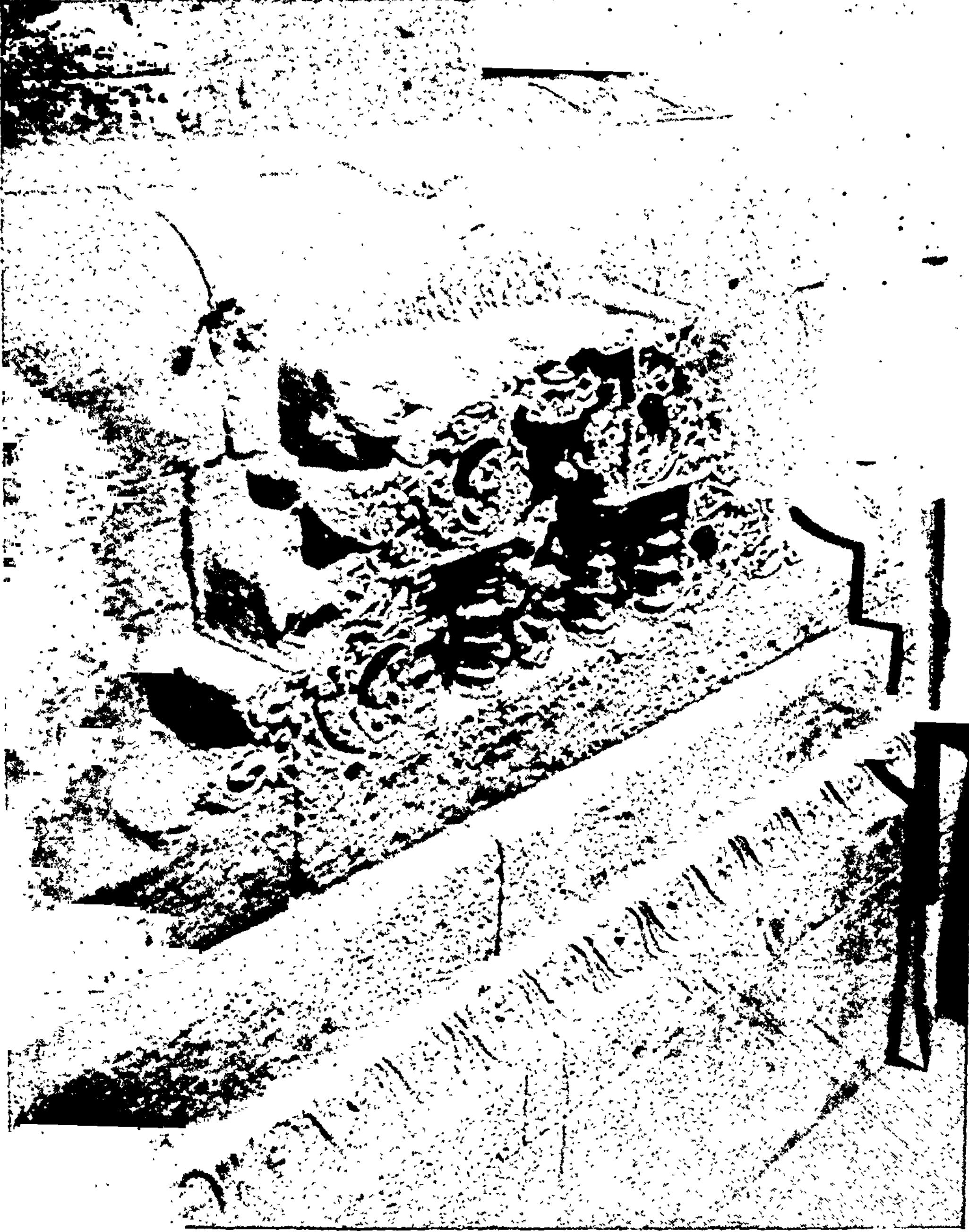
હાલના સોમનાથ મંદિરનું દૃશ્ય



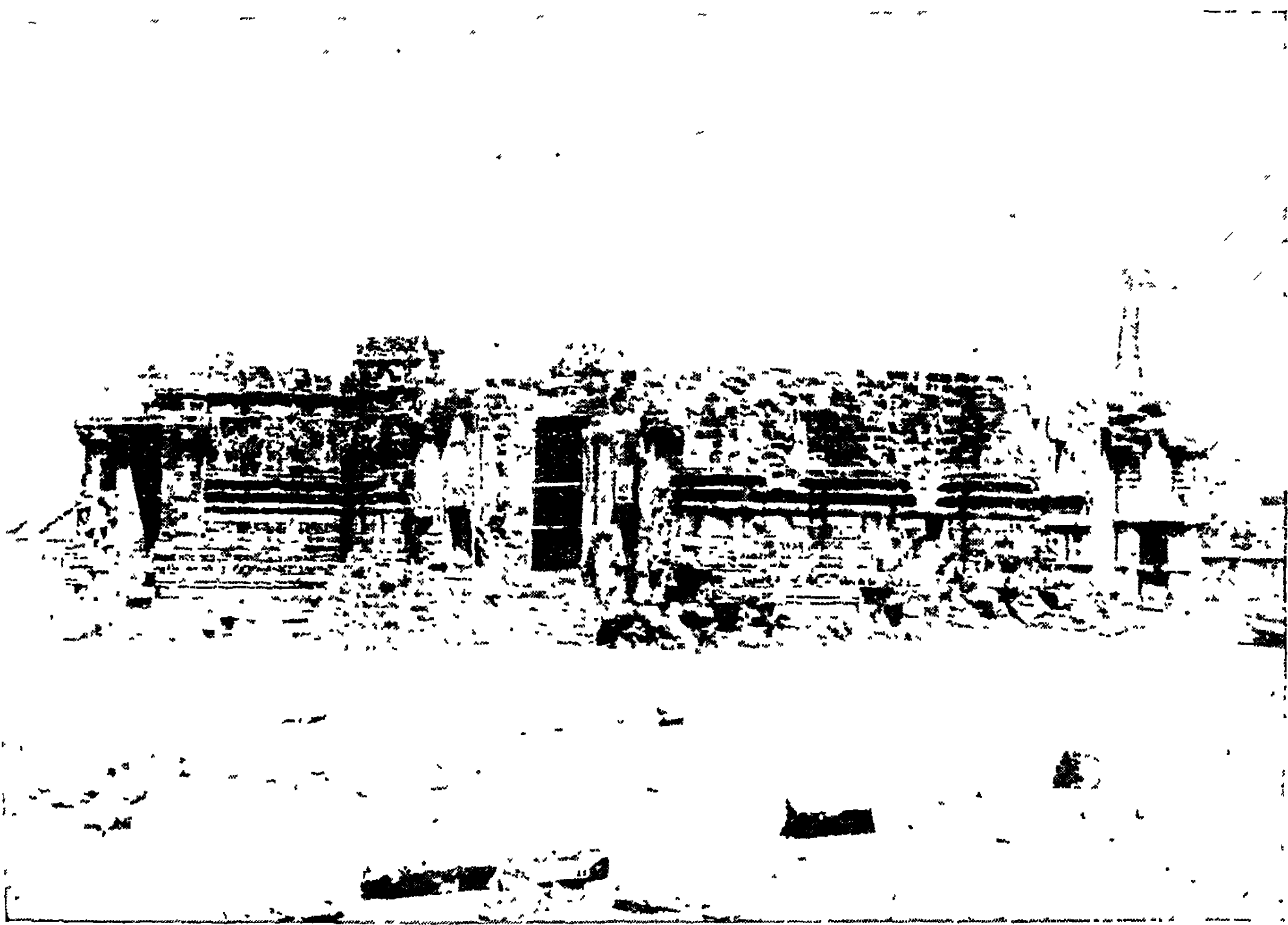
Prabhās Pātan
Somnāth

Sculpture : North
शिल्प उत्तर

Kumarpal
1161 A.D.



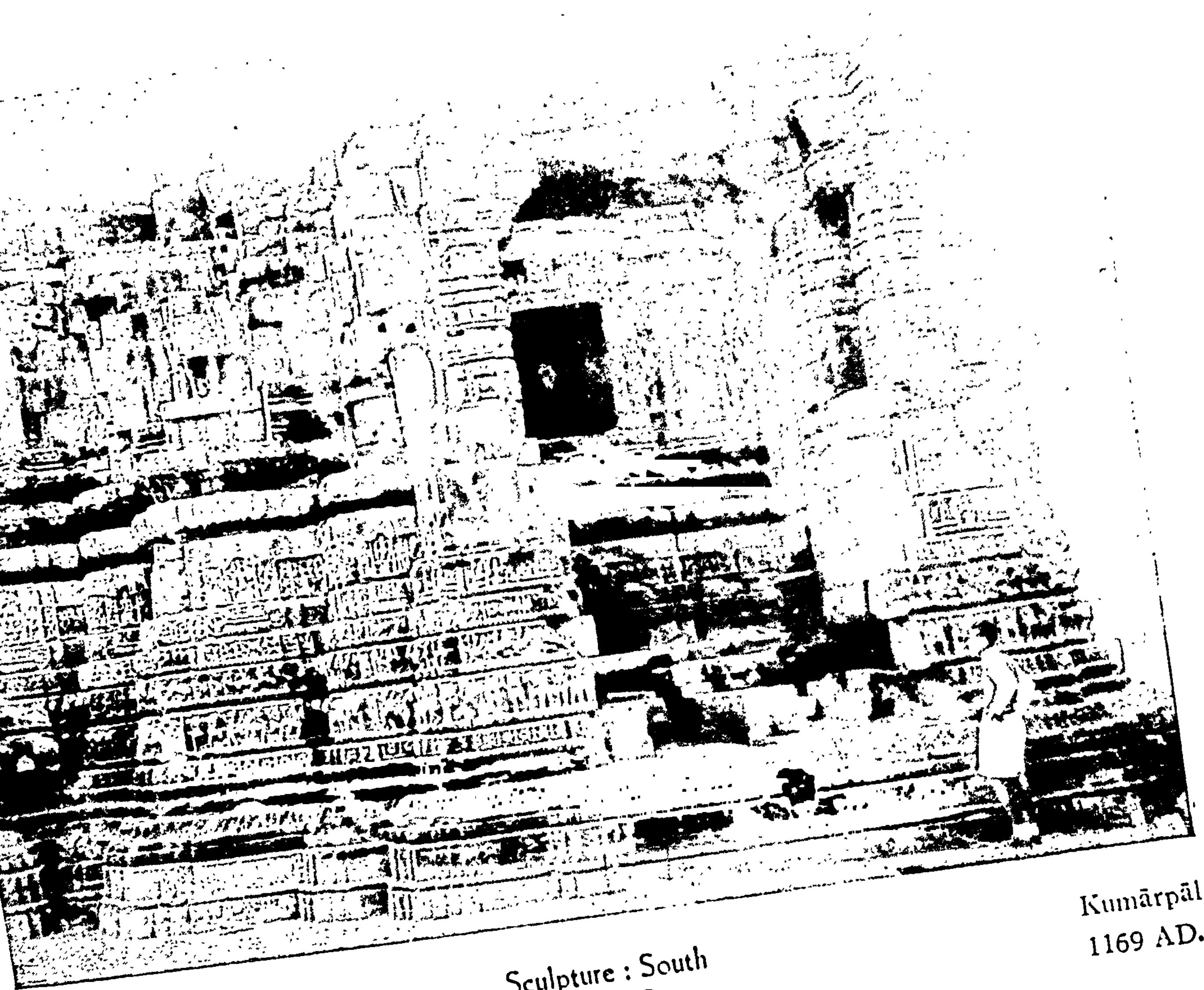
Prabhās Pātan	Smaller Temple : West	Mahipāl
Somnāth	छोटा मंदिर : पश्चिम	1320



Prabhas Patan
Somnath

Somnath Temple : South (1920)
सोमनाथ मंदिर : दक्षिण (१९२०)

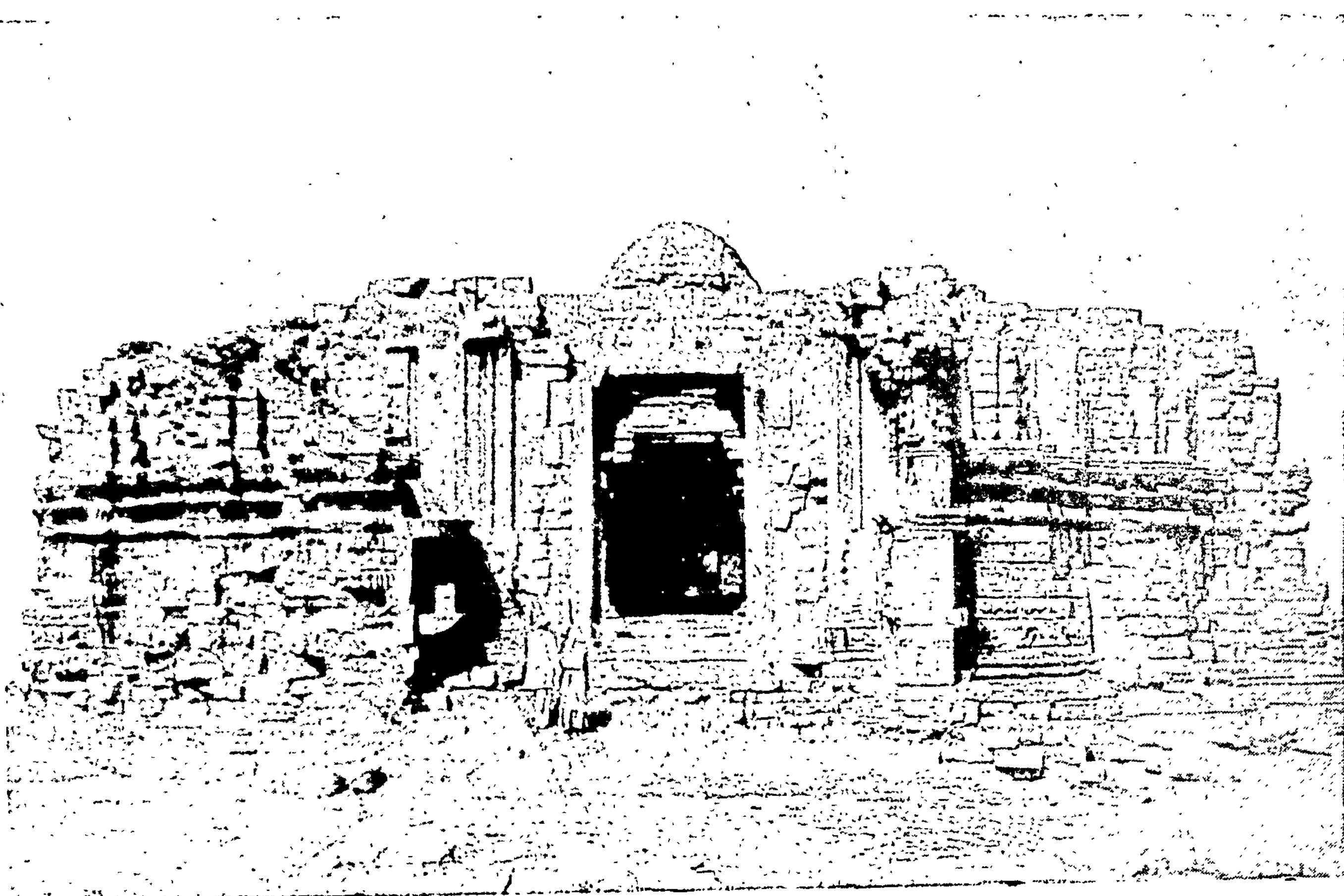
Kumarpal
1169 AD.



Kumārpāl
1169 AD.

Sculpture : South
शिल्प : दक्षिण

Prabhās Pātan
Somnāth



Prabhās Pātan
Somnāth

Sculpture : Entrance : East
शिल्प : प्रवेशद्वार : पूर्व

Kumārpāl
1169 A.D.



Prabhās Pātan
Somnāth

Natarāja : South
नटराज : दक्षिण

Kumārpāl
1169 A.D.

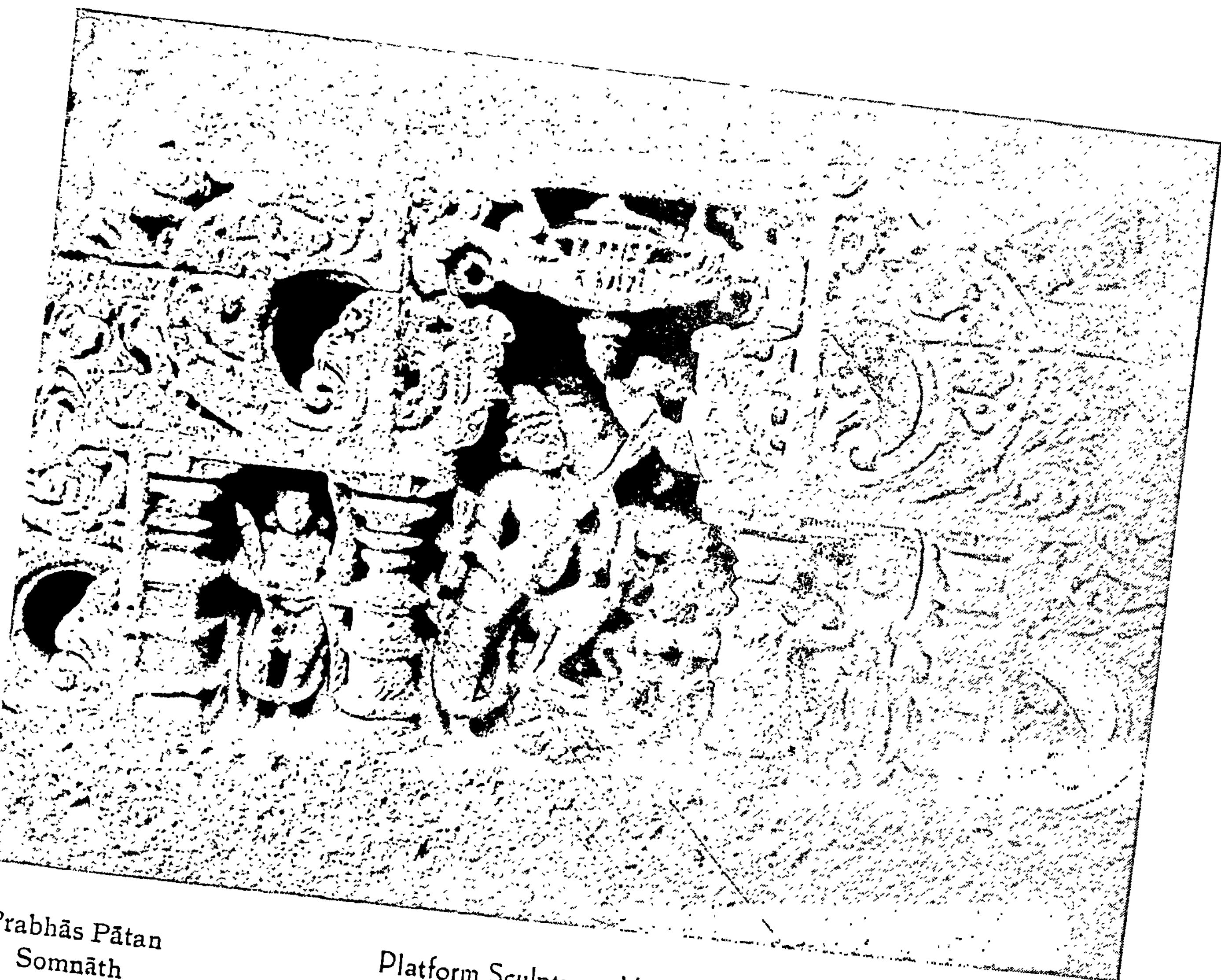


Prabhās Pātan
Somnāth

Yogi
योगी

Male Sculpture
देवनृत्य

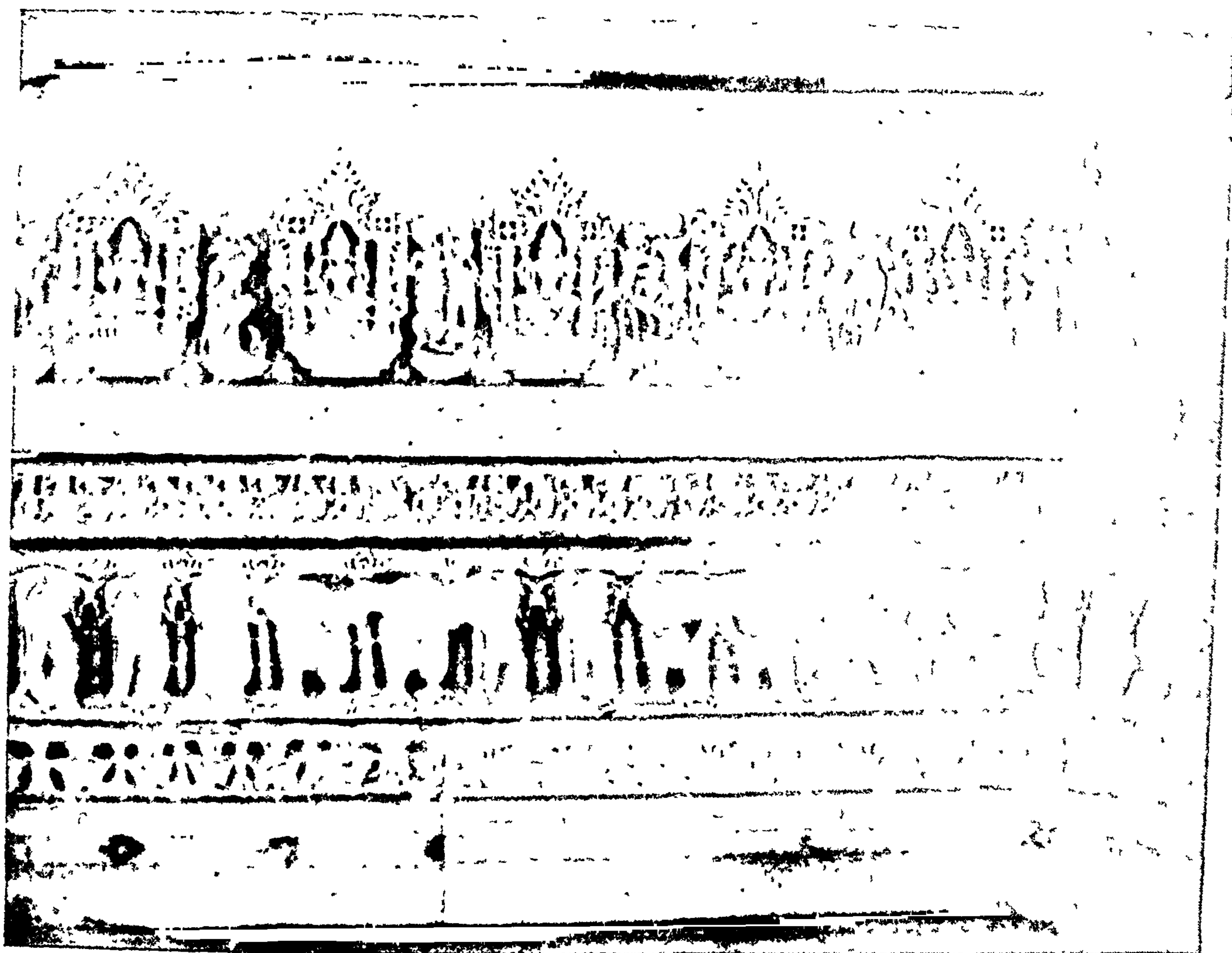
12th Cent.



Prabhās Pātan
Somnāth

Platform Sculpture : Vāman
वामनावतार

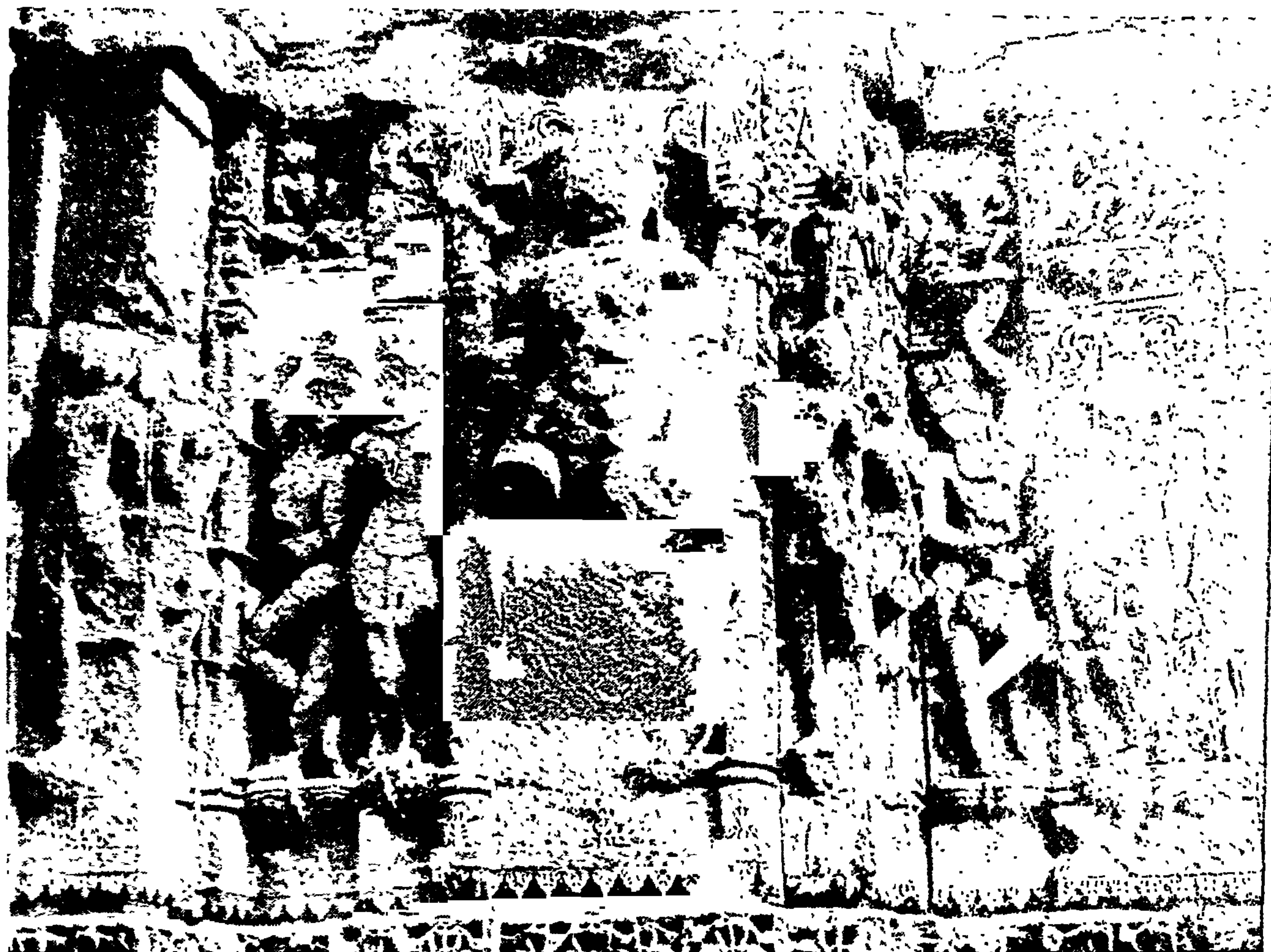
Bhimdev I
1030 A.D.



Prabhās Pātan
Somnāth

Detail of Sculpture
गजथर

Mahipāl
1320 A.D.



Prabhās Pātan
Somnāth

Panel of Gods : South
देवथर : दक्षिण

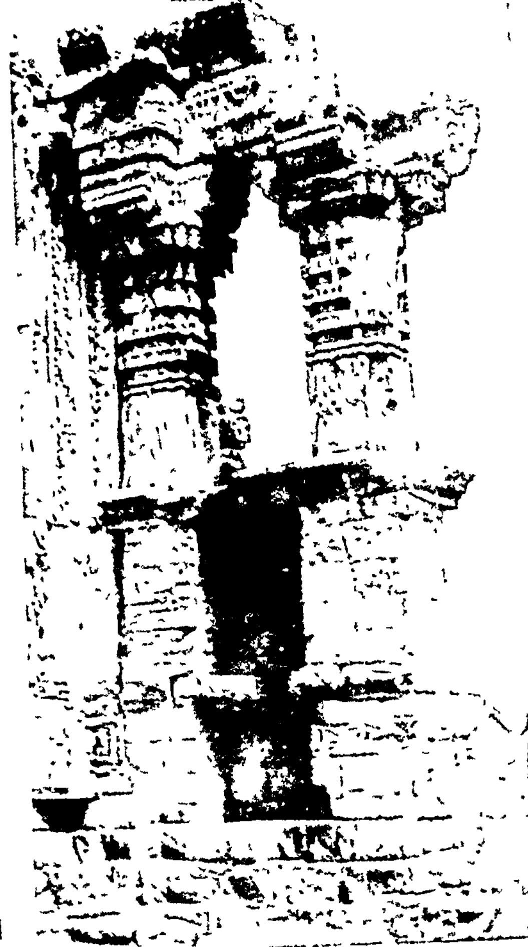
Kumārpāl
1169 A.D.

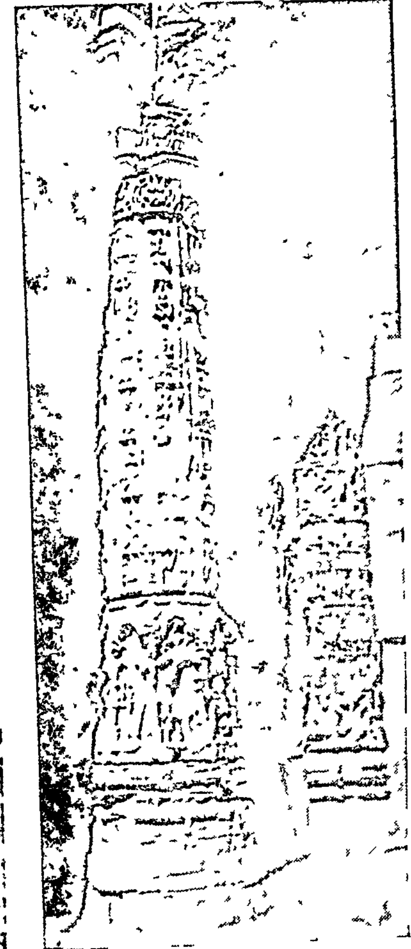


Prabhās Pātan Somnāth | Three Outlets : Sanctum : North | 1320; 1030 &

३ जलमार्ग : गर्भगृह : उत्तर | 8th Cent. A.D.



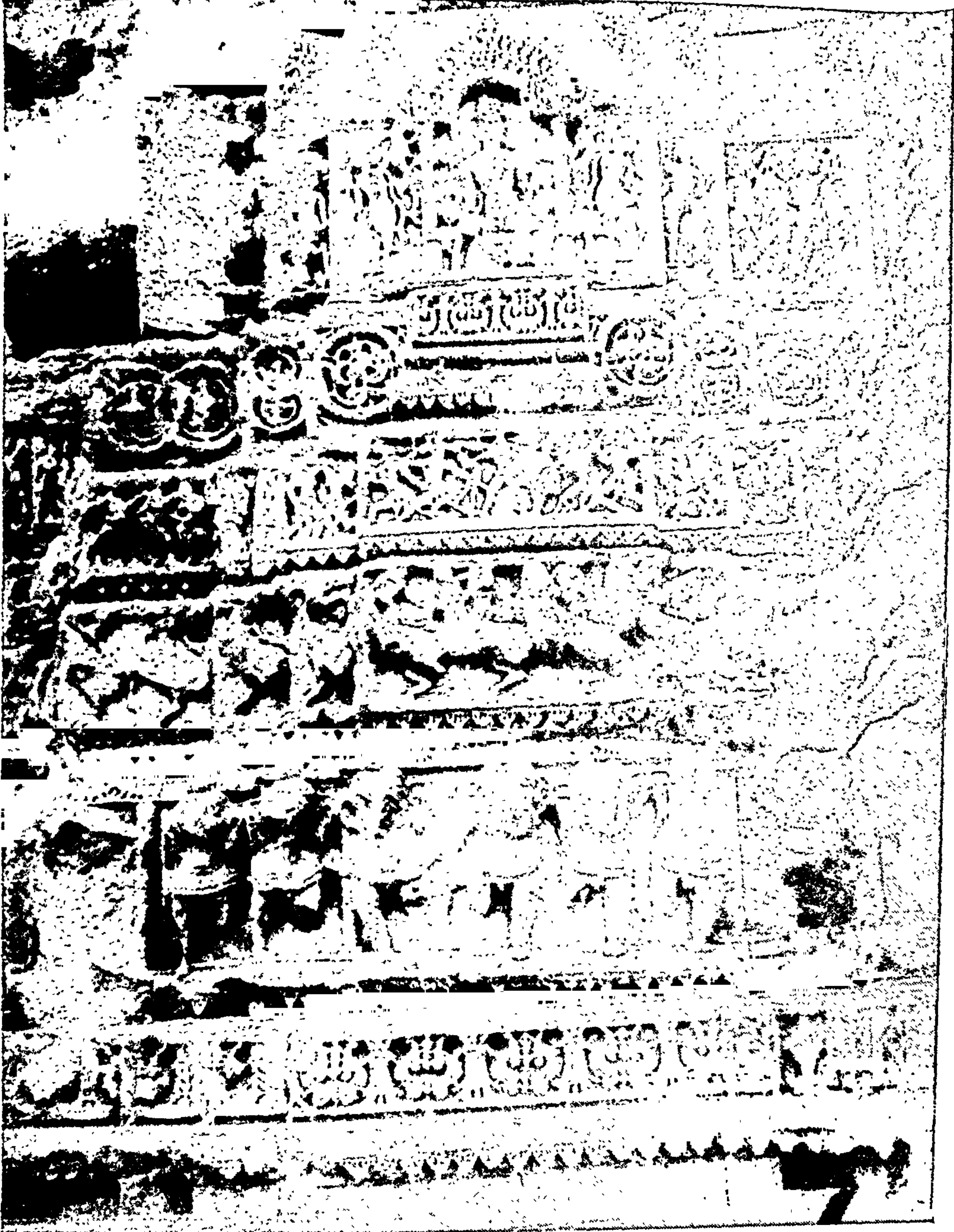




Prabhās Pātan
Somnāth

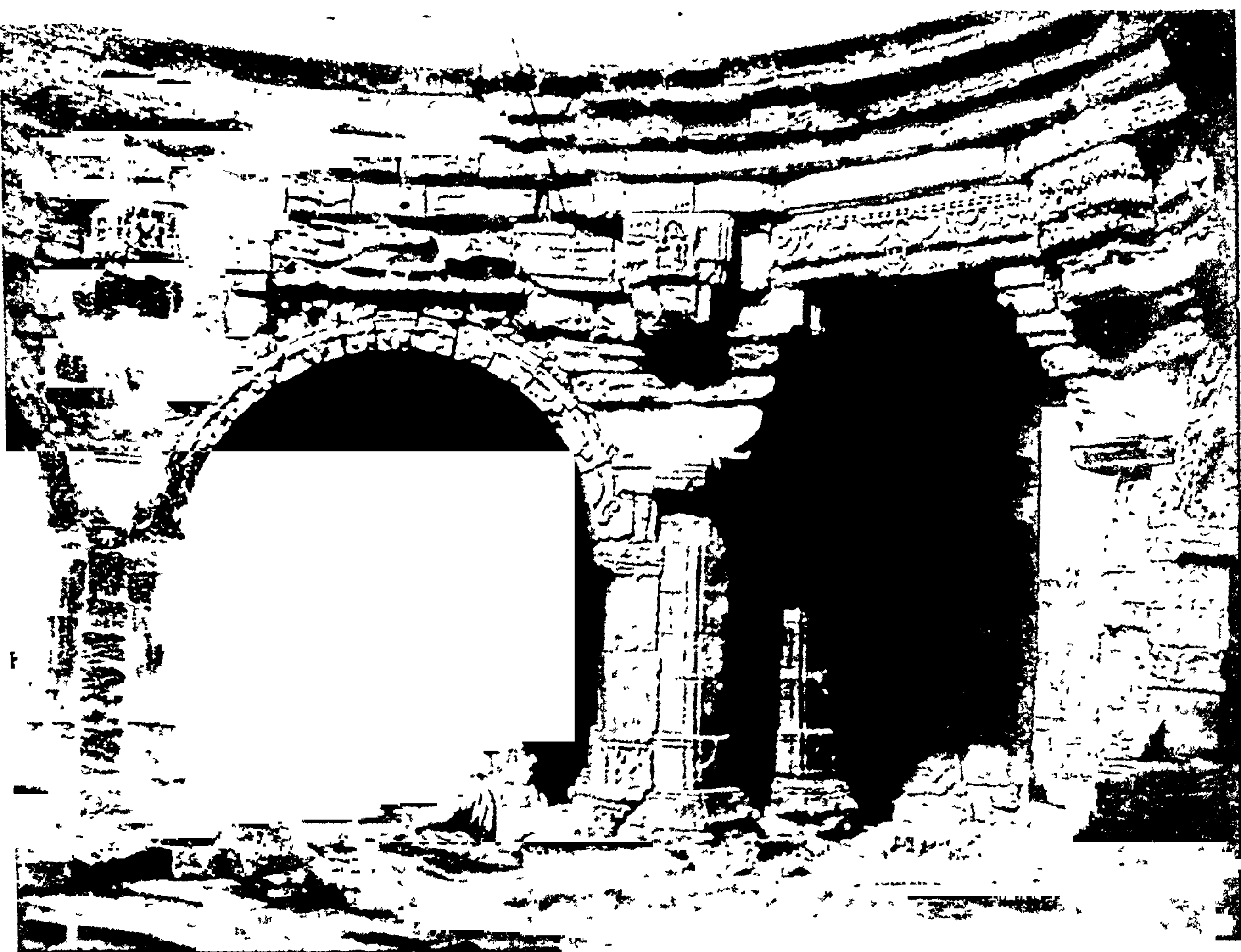
Sculpture in Pillars
स्तंभशिल्प

1169 A.D.
1230 A.D.



Prabhās Pātan Somnāth — Elephants, Horses, Men and Gods: North — Kumārpāl

गजथर, अश्वथर, नरथर, देवथर: उत्तर — 1169 AD.



Prabhās Pātan Somnath — Arches : Hindu and Muslim — 12th Cent. 14th Cent.

कमान : हिन्दु-मुस्लिम



Prabhās Pātan
Somnāth

Platform Mouldings
पुराना शिल्पावशेष

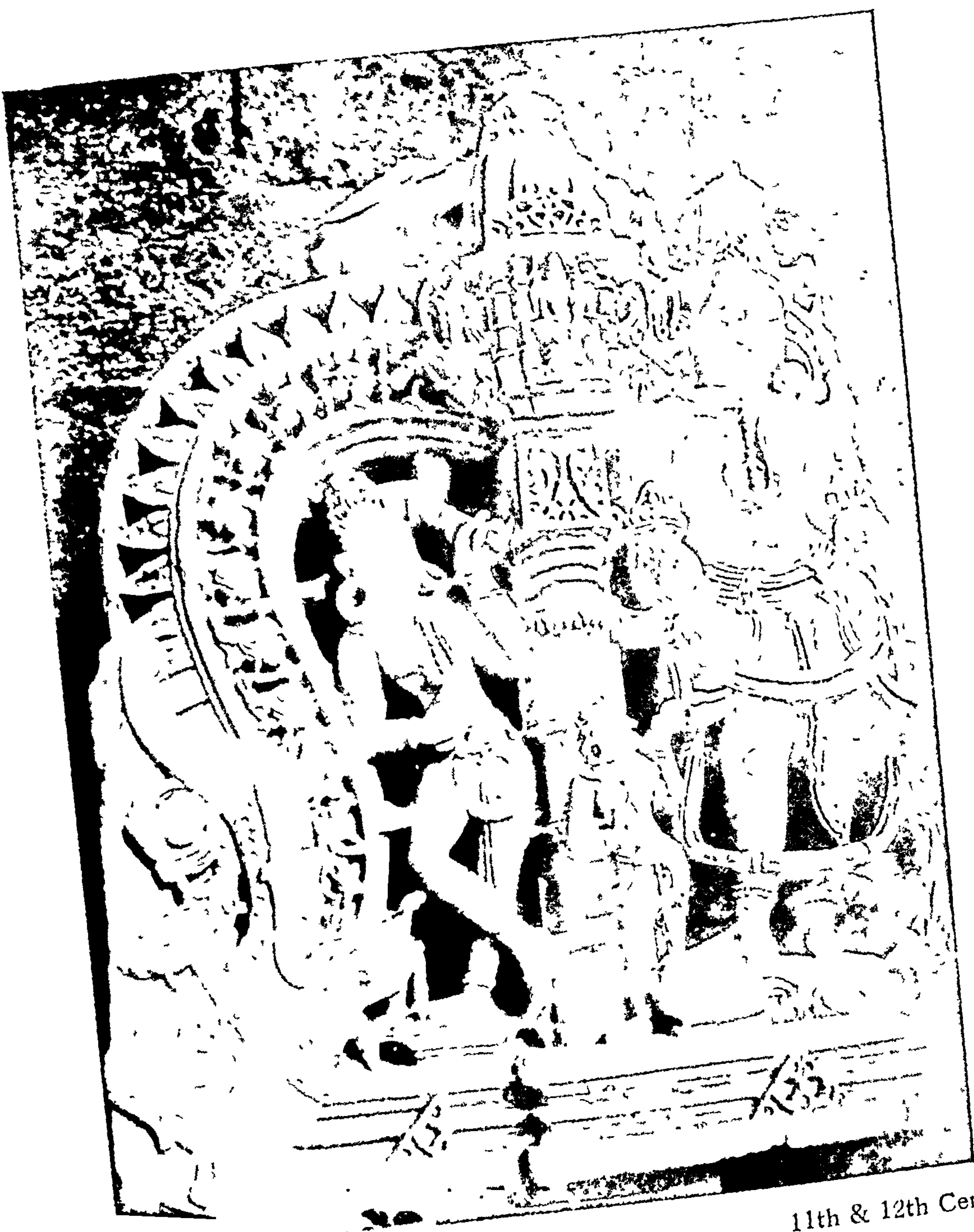
Bhimdev I
1030 A.D. & 8th Cent.



Prabhās Pātan
Somnāth

Nataraja
नटराज

11th & 12th Cent.

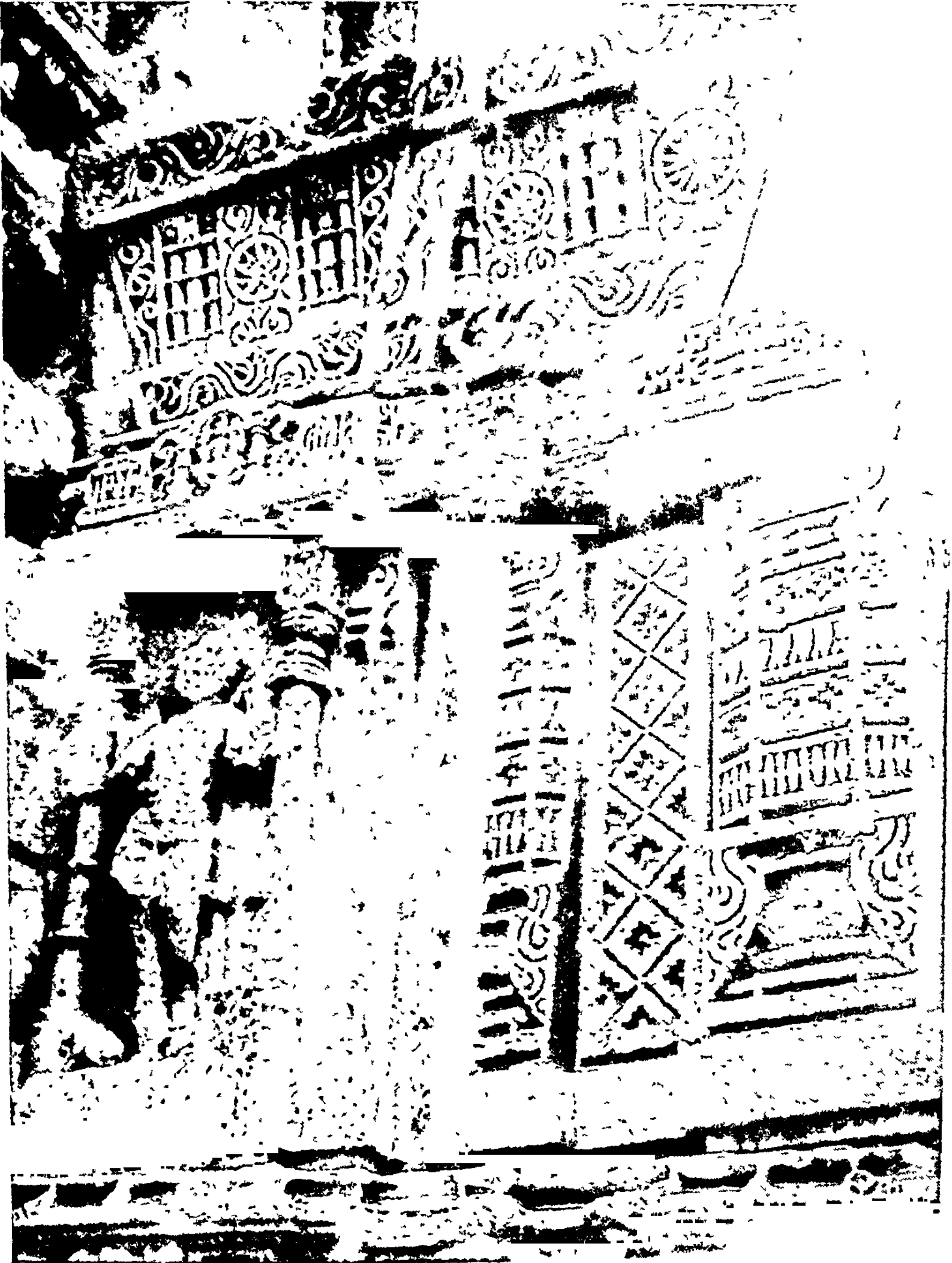


11th & 12th Cent.

Torana Piece

तोरण

Prabhās Pātan
Somnāth



Prabhās Pātan
Somnāth

Portico Parapet : East
नृत्यमंडप कक्षासन : पूर्व

Bhimdev II
1230 A.D.



Prabhās Pātan
Somnāth

Shiva as Kirat
शिव : किरात स्वरूप

Kumārpāl
1169 A.D.